www.bharatsamvad.live

R.N.I.No- MAHHIN/2017/74173

सत्य का स्वर

भारत संवाद

मुंबई, प्रयागराज और लखनऊ से प्रकाशित

मौसम

अधिकतम तापमान 30.c

27.c न्यूनतम तापमान

बाजार

सोना 98.755g

चांदी 107,000kg

सोशल मीडिया पर भारत संवाद

https://x.com/BharatSamvad

www.facebook.com/bharatsamvad.in

www.youtube.com/@BharatSamvad-m3n

E-Paper bharatsamvad.live

2 विश्व के लिए खतरनाक होगा टैरिफ का दांव, भारत को अपनी कूटनीति पर लगाना होगा दांव

श्रद्धालुओं की कार को ट्रक ने मारी टक्कर 04

वर्ष :09 | अंक :31 | मुंबई , मंगलवार , 22 जुलाई 2025 | पृष्ठ : 06 | मूल्य : 2: 00 रुपए

ऑपरेशन सिंदूर, एसआईआर, सीजफायर... मानसून सत्र के पहले ही दिन महासंग्राम

यह संसद है, प्राइवेट ड्राइंग रूम नहीं, नियमों के दायरे में रहना होगा, राहुल-प्रियंका पर धर्मेंद्र प्रधान का पलटवार

मानसून सत्र

निचले सदन की कार्यवाही एक घंटे के भीतर दो बार स्थगित हुई, जबकि राज्यसभा में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा के बीच तीखी बहस हुई। लोकसभा मे राजनाथ सिंह और राज्यसभा में जेपी नड्डा ने कहा कि सरकार हर मुद्दे पर चर्चा को तैयार है।

एजेंसी

नयी दिल्ली। संसद के मानसून सत्र के पहले दिन सोमवार को केंद्र और विपक्ष के बीच तीखी नोकझोंक देखने को मिली। विपक्षी सांसदों ने ऑपरेशन सिंदूर को लेकर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के दावों पर चर्चा की मांग की। दिन भर की कार्यवाही में तीखी नारेबाजी और बहस देखने को मिली। निचले सदन की कार्यवाही एक घंटे के भीतर दो बार स्थगित हुई, जबकि राज्यसभा में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा के बीच तीखी बहस हुई। लोकसभा मे राजनाथ सिंह और राज्यसभा में जेपी नड्डा ने कहा कि सरकार हर मुद्दे पर चर्चा को तैयार है। वहीं, लोकसभा में विपक्ष के नेता ने सत्तारूढ़ पार्टी पर संसद में उन्हें बोलने नहीं देने का आरोप लगाया। भ्रष्टाचार के आरोपों से घिरे न्यायाधीश यशवंत वर्मा को हटाने के प्रस्ताव से संबंधित नोटिस सोमवार को लोकसभा और राज्यसभा में दिए गए।

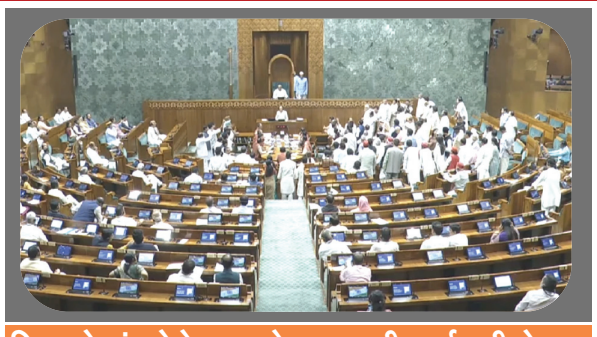

विपक्ष के हंगामे के बाद लोकसभा की कार्यवाही दोपहर 2 बजे तक स्थगित, राजनाथ सिंह का बयान

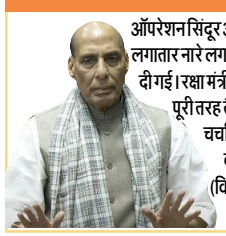

ऑपरेशन सिंदूर और पहलगाम हमले पर चर्चा की मांग को लेकर विपक्षी सांसदों के लगातार नारे लगाने के कारण लोकसभा की कार्यवाही 1400 बजे तक स्थगित कर दी गई। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि सरकार किसी भी मुद्दे पर चर्चा के लिए पूरी तरह तैयार है। वहीं, केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा कि चर्चा के एजेंडे पर निर्णय लेने के लिए 1430 बजे बिजनेस एडवाइजरी कमेटी की बैठक होगी। सरकार चर्चा के लिए तैयार है, लेकिन वे (विपक्षी सांसद) यहां (सदन के वेल में) विरोध कर रहे हैं। मानसून सत्र के पहले दिन इस तरह विरोध करना सही नहीं है।

मैं विपक्ष का नेता हूं, लेकिन मुझे बोलने नहीं दिया जा रहा....राहुल गांधी ने लगाया बड़ा आरोप

कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा ने कहा कि अगर वे (सरकार) चर्चा के लिए तैयार हैं, तो उन्हें विपक्ष के नेता को बोलने देना चाहिए। वह बोलने के लिए खड़े हुए हैं, इसलिए उन्हें बोलने दिया जाना चाहिए।

मानसून सत्र के पहले दिन दोपहर 2 बजे तक के लिए स्थगित होने के बाद, लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने सरकार पर बड़ा आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि सवाल यह है कि रक्षा मंत्री को सदन में बोलने की अनुमति है, लेकिन विपक्ष के सदस्यों, जिनमें मैं भी शामिल हूं, जो विपक्ष का नेता हूं, को बोलने की अनुमति नहीं है। यह एक नया दृष्टिकोण है। परंपरा कहती है कि यदि सरकार की ओर से लोग बोल सकते हैं, तो हमें भी बोलने की जगह दी जानी चाहिए। कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा ने कहा कि अगर वे (सरकार) चर्चा के लिए तैयार हैं, तो उन्हें विपक्ष के नेता को बोलने देना चाहिए। वह बोलने के लिए खड़े हुए हैं, इसलिए उन्हें बोलने दिया जाना चाहिए। सपा सांसद राजीव राय ने कहा कि हमारे लिए राष्ट्रहित सर्वोच्च है।

लोकसभा की कार्यवाही

विपक्षी सदस्यों के हंगामे के कारण सोमवार को लोकसभा की कार्यवाही तीन बार के स्थगन के बाद दिनभर के लिए स्थगित कर दी गई। सदन में विपक्षी दलों के सदस्यों ने पहलगाम आतंकी हमले, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के मध्यस्थता संबंधी दावों और बिहार में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) की कवायद समेत अन्य विषयों पर चर्चा की मांग करते हुए हंगामा किया। भ्रष्टाचार के आरोपों से घिरे न्यायाधीश यशवंत वर्मा को हटाने के प्रस्ताव से संबंधित नोटिस सोमवार को लोकसभा और राज्यसभा में दिए गए। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को सौंपे गए नोटिस पर नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी, भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता रविशंकर प्रसाद, अनुराग ठाकुर समेत कुल 145 सदस्यों ने हस्ताक्षर किए हैं। निचले सदन में अनुच्छेद 124, 217 और 218 के तहत नोटिस दिए गए हैं।

19 साल बाद मुंबई ट्रेन ब्लास्ट केस के 11 आरोपी बरी

त्रासदी में जीवित बचे शख्स ने इसे न्याय की हत्या करार दिया

एजेंसी

मुंबई के उपनगरीय रेल नेटवर्क में सिलसिलेवार बम विस्फोटों के लगभग दो दशक बाद, 2006 की त्रासदी में जीवित बचे चिराग चौहान ने सोमवार को बॉम्बे उच्च न्यायालय द्वारा सभी 12 आरोपियों को बरी किए जाने पर निराशा व्यक्त करते हुए कहा कि न्याय की हत्या कर दी गई। अब 40 वर्षीय चिराग चौहान 21 वर्षीय चार्टर्ड अकाउंटेंसी के छात्र थे, जब 11 जुलाई 2006 को खार और सांताक्रूज स्टेशनों के बीच बम विस्फोट हुआ था। विस्फोट के कारण उनकी रीढ़ की हड्डी में चोट लग गई और वे व्हीलचेयर पर आ गए। आज, वे एक चार्टर्ड अकाउंटेंट हैं और विस्फोट पीड़ितों की आवाज बनते हैं। फैसले के कुछ घंटे बाद, चौहान ने सोशल मीडिया पर बरी होने पर अपनी पीड़ा साझा की। उन्होंने कहा, आज सभी के लिए बहुत दुखद दिन है! न्याय की हत्या हो गई!! हजारों परिवारों को हुई अपूरणीय क्षति और पीड़ा के लिए किसी को सजा नहीं मिली।

> फैसले के कुछ घंटे बाद, चौहान ने सोशल मीडिया पर बरी होने पर अपनी पीड़ा साझा की। उन्होंने कहा, आज सभी के लिए बहुत दुखद दिन है! न्याय की हत्या हो गई!! हजारों परिवारों को हुई अपूरणीय क्षति और पीड़ा के लिए किसी को सजा नहीं मिली।

संक्षिप्त समाचार

आत्मदाह से हुई मौत की न्यायिक जांच की मांग, बीजद नेताओं ने विरोध प्रदर्शन किया

सैकड़ों बीजद नेताओं और कार्यकर्ताओं ने ओडिशा के तीन अलग-अलग क्षेत्रों में राजस्व संभागीय आयुक्तों के कार्यालयों के समक्ष प्रदर्शन किया और 12 जुलाई को बालासोर में एक छात्रा की आत्मदाह से हुई मौत की जांच के लिए न्यायिक पैनल के गठन की मांग की। विधायकों सहित विपक्षी नेताओं ने कटक, बरहामपुर और संबलपुर में आरडीसी कार्यालयों के समक्ष प्रदर्शन किया तथा उड़ीसा उच्च न्यायालय के वर्तमान न्यायाधीश की अध्यक्षता में न्यायालय की निगरानी में न्यायिक जांच की मांग की। कटक में आरडीसी कार्यालय के पास प्रदर्शन में शामिल होते हुए बीजद के वरिष्ठ उपाध्यक्ष देबी प्रसाद मिश्रा ने आरोप लगाया त्र ने उच्च पदों पर बैठे कई महत्वपूर्ण लोगों से मदद मांगी थी। लेकिन उनमें से कोई भी छात्र की मदद के लिए आगे नहीं आया। फकीर मोहन कॉलेज की 20 वर्षीय इंटीग्रेटेड बीएड द्वितीय वर्ष की छात्रा ने आत्मदाह के प्रयास के दो दिन बाद 14 जुलाई की रात को एम्स भुवनेश्वर में 95 प्रतिशत जलने के कारण दम तोड़ दिया। इस घटना से देश भर में आक्रोश फैल गया।

दिल्ली हाई को मिले 6 नए जज, कॉलेजियम का भी होगा पुनर्गठन

दिल्ली हाई कोर्ट को सोमवार को छह नए न्यायाधीश मिले, जिससे स्वीकृत पदों की संख्या 60 के मुकाबले प्रभावी संख्या 40 हो गई। मुख्य न्यायाधीश देवेंद्र कुमार उपाध्याय ने उच्च न्यायालय परिसर में इन न्यायाधीशों को पद की शपथ दिलाई। नवनियुक्त न्यायाधीशों में न्यायमूर्ति वी. कामेश्वर राव, नितिन वासुदेव साम्ब्रे, विवेक चौधरी, अनिल क्षेत्रपाल, अरुण कुमार मोंगा और ओम प्रकाश शुक्ला शामिल हैं। न्यायमूर्ति विवेक चौधरी ने हिंदी में शपथ ली, जबकि शेष पाँच न्यायाधीशों ने अंग्रेजी में शपथ ली। न्यायमूर्ति नितिन वासुदेव साम्ब्रे का बॉम्बे उच्च न्यायालय से स्थानांतरण हुआ था। जबकि न्यायमूर्ति विवेक चौधरी और ओम प्रकाश शुक्ला इलाहाबाद उच्च न्यायालय में कार्यरत थे। न्यायमूर्ति क्षेत्रपाल पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय में और न्यायमूर्ति मोंगा राजस्थान उच्च न्यायालय में कार्यरत थे। न्यायमूर्ति राव को कर्नाटक उच्च न्यायालय से दिल्ली वापस भेजा गया है। इसके अलावा, दिल्ली उच्च न्यायालय के वरिष्ठतम न्यायाधीश न्यायमूर्ति विभु बाखरू को कर्नाटक उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के रूप में पदोन्नत किए जाने पर 16 जुलाई को औपचारिक विदाई दी गई। उनके जाने के बाद दिल्ली उच्च न्यायालय के तीन न्यायाधीशों वाले कॉलेजियम का पुनर्गठन भी हुआ है।

शहीद दिवस रैली में ममता बनर्जी की हुंकार

पश्चिम बंगाल में एसआईआर जैसा कुछ नहीं होने देंगे

> बनर्जी के तीखे भाषण में पश्चिम बंगाल में एनआरसी नोटिस से लेकर भाजपा शासित राज्यों में बंगालियों को निशाना बनाने, कथित तौर पर उन्हें डिटेंशन कैंपों में डालने और मतदाता सूची से उनके नाम हटाने के प्रयासों तक, कई मुद्दों पर बात की गई।

एजेंसी

पश्चिम बंगाल में 2026 में होने वाले विधानसभा चुनावों से पहले अपनी 'बंगाली अस्मिता' (गौरव) की बात को तेज करते हुए मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने सोमवार को भाजपा पर बंगालियों पर भाषाई आतंकवाद फैलाने का आरोप लगाया और कहा कि पहचान और भाषा की लड़ाई तब तक जारी रहेगी जब तक कि भगवा पार्टी राज्य और केंद्र दोनों में हार नहीं जाती। बनर्जी ने कहा कि हम सभी भाषाओं का सम्मान करते हैं, चाहे वह हिंदी हो, गुजराती हो, मराठी हो, राजस्थानी हो। पश्चिम बंगाल के लोगों ने स्वतंत्रता आंदोलन में बड़ी भूमिका निभाई थी। पश्चिम बंगाल के लोग जो कर सकते हैं, वह कोई और नहीं कर सकता। कोलकाता में टीएमसी शहीद दिवस रैली को संबोधित करते हुए, बनर्जी ने 2026 के चुनावों में भगवा पार्टी को हराने और अंततः केंद्र की सत्ता से भाजपा को बेदखल करने का आह्वान किया। मध्य कोलकाता स्थित रैली स्थल पर भारी भीड़ के सामने बनर्जी ने गरजते हुए कहा कि बंगाली भाषा पर भाजपा के आतंकवाद के खिलाफ एक भाषाई आंदोलन होगा। 27 जुलाई से, बंगालियों पर हमलों के विरोध में पश्चिम बंगाल में भाषाई आंदोलन शुरू होगा। उन्होंने जोर देकर कहा, हमें 2026 के विधानसभा चुनावों में और सीटें जीतनी हैं।

बांग्लादेश में बड़ा हादसा, स्कूल पर गिरा सेना का विमान, 19 की मौत, 171 घायल

हादसे के वक्त चल रही थी क्लास

एजेंसी

ढाकाः बांग्लादेश की राजधानी ढाका के उत्तरा क्षेत्र में सोमवार को एक भयानक हादसा हुआ जब बांग्लादेश वायुसेना का एक प्रशिक्षण विमान उड़ान के कुछ ही मिनटों बाद माइलस्टोन स्कूल और कॉलेज परिसर में दुर्घटनाग्रस्त हो गया. यह हादसा दोपहर 1:30 बजे के करीब हुआ. वायुसेना की ओर से बताया गया कि विमान ने 1:06 बजे उड़ान भरी थी, और तकनीकी खराबी के चलते 1:30 बजे हादसे का शिकार हो गया. दुर्घटनाग्रस्त विमान चीनी मूल का था, जिसे मिग-21 की लाइसेंस कॉपी माना जाता है. स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, इस हादसे में अब तक कम से कम 19 लोगों की मौत हो चुकी है और 100 से अधिक लोग घायल हैं. कई की हालत गंभीर है, जिससे मृतकों की संख्या और बढ़ सकती है. मृतकों में कई छात्र भी शामिल बताए जा रहे हैं, जिनमें प्राथमिक कक्षाओं के बच्चे भी थे.

बचाव कार्य में सेना, बीजीबी और पुलिस जुटी

घटना के तुरंत बाद बांग्लादेश सेना, अर्धसैनिक बल, पुलिस और वायुसेना की टीमें मौके पर पहुंचीं. बांग्लादेश बॉर्डर गार्ड (बीजीबी) की तीन टुकड़ियों को भी राहत और बचाव कार्यों में लगाया गया है. आसपास के इलाकों को सील कर दिया गया है.

अस्पताल ने हेल्पलाइन नंबर जारी किया

घायलों को ढाका के राष्ट्रीय बर्न और प्लास्टिक सर्जरी संस्थान में भर्ती कराया गया है. अस्पताल ने आपातकालीन स्थिति के लिए हेल्पलाइन नंबर 01949-043697 जारी किया है

'राजनीतिक लड़ाई के लिए एजेंसी का इस्तेमाल न किया जाए...'

सुप्रीम कोर्ट ने ईडी पर की सख्त टिप्पणी

सुप्रीम कोर्ट ने दो मामलों में सोमवार को पर सख्त टिप्पणी की, और कहा कि एजेंसी को राजनीतिक लड़ाइयों में इस्तेमाल न होने दिया जाए. एक मामला कर्नाटक एमयूडीए केस में हाई कोर्ट के राहत आदेश को चुनौती देने से जुड़ा था. कोर्ट ने एऊ की अपील खारिज कर दी और चेतावनी भी दी.

एजेंसी

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) को कड़ी फटकार लगाते हुए, सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को विवादास्पद मैसूर शहरी विकास प्राधिकरण (एमयूडीए) भूमि आवंटन मामले में कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया की पत्नी बी.एम. पार्वती को जारी ईडी के समन को रद्द करने के कर्नाटक उच्च न्यायालय के फैसले को बरकरार रखा। शीर्ष अदालत ने ईडी को राजनीतिक उद्देश्यों के लिए दुरुपयोग न करने की भी चेतावनी दी। भारत के मुख्य न्यायाधीश बीआर गवई और न्यायमूर्ति के. विनोद चंद्रन की अध्यक्षता वाली सर्वोच्च न्यायालय ने ईडी की कार्रवाई।

हम सच्चाई के साथ, अंतिम रिपोर्ट आने के बाद ही निष्कर्ष पर पहुँचें...

अहमदाबाद प्लेन क्रैश पर बोले राम मोहन नायडू

> नायडू ने राज्यसभा के सदस्यों को आश्वासन दिया कि एएआईबी एयर इंडिया विमान दुर्घटना की पारदर्शी जाँच कर रहा है। उन्होंने कहा कि मामले से संबंधित रचनात्मक उत्तर अंतिम रिपोर्ट आने के बाद ही सामने आ पाएँगे।

एजेंसी

केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री राम मोहन नायडू ने एयर इंडिया विमान दुर्घटना पर चर्चा की मांग कर रहे विपक्ष के हंगामे के बीच राज्यसभा में अपना बयान दिया है। राम मोहन नायडू ने एयर इंडिया विमान दुर्घटना पर पश्चिमी मीडिया के बयानों की कड़ी आलोचना की। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार सच्चाई के साथ खड़ी है और विपक्षी सदस्यों से आग्रह किया कि वे एएआईबी की अंतिम रिपोर्ट आने के बाद ही किसी निष्कर्ष पर पहुँचें। नायडू ने राज्यसभा के सदस्यों को आश्वासन दिया कि एएआईबी एयर इंडिया विमान दुर्घटना की पारदर्शी जाँच कर रहा है। उन्होंने कहा कि मामले से संबंधित रचनात्मक उत्तर अंतिम रिपोर्ट आने के बाद ही सामने आ पाएँगे। विपक्ष ने अहमदाबाद में एयर इंडिया विमान दुर्घटना में मारे गए मेडिकल छात्रों को दिए जा रहे मुआवजे पर सरकार से सवाल किया। जवाब में, नागरिक उड्डयन मंत्री राम मोहन नायडू ने कहा कि पीड़ितों चाहे वे यात्री हों या अन्य के बीच कोई भेदभाव नहीं किया जा रहा है और विमान में सवार लोगों के अलावा, जान गंवाने वाले सभी लोगों के परिवारों को समान मुआवजा और सहायता दी जा रही है। उन्होंने कहा कि एएआईबी पारदर्शी तरीके से जाँच कर रहा है.

वैष्णो देवी के पुराने मार्ग पर भूस्खलन, एक श्रद्धालु की मौत, नौ घायल

>> वैष्णो देवी मंदिर जाने वाले मार्ग पर भारी बारिश के कारण भूस्खलन हुआ है. कटरा में एक श्रद्धालु की मौत होने की सूचना है.

एजेंसी

जम्मू: जम्मू-कश्मीर के रियासी जिले में वैष्णो देवी मंदिर जाने वाले पुराने मार्ग पर सोमवार को भीषण भूस्खलन हुआ. इस घटना में एक तीर्थयात्री की मौत हो गई, जबकि 10 अन्य घायल हो गए. एहतियात के तौर पर मंदिर की यात्रा दोपहर एक बजे तक स्थगित कर दी गई थी. भारी बारिश के कारण कटरा में भूस्खलन हुआ. त्रिकुटा पहाड़ियों पर स्थित मंदिर में आने वाले तीर्थयात्रियों का आधार शिविर है.कब घटी घटना:यह घटना सुबह लगभग 8.30 बजे बाणगंगा के पास गुलशन का लंगर में घटी. ज्यादातर टट्टू सवार पुराने मार्ग पर एकत्र होते हैं

आश्वासन हिमंत विश्व शर्मा का जनता को आश्वासन

'ब्रह्मपुत्र नदी पर चीन के बांध बनाने से फिलहाल चिंता की कोई बात नहीं'

एजेंसी

नई दिल्ली , असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने सोमवार को ब्रह्मपुत्र पर दुनिया के सबसे बड़े बांध के निर्माण के चीन के कदम पर आशंकाओं को कम करने की कोशिश की और कहा कि उन्हें तत्काल चिंता की कोई बात नहीं दिखती क्योंकि नदी को अपना अधिकांश पानी भूटान और अरुणाचल प्रदेश से मिलता है। यहां एक समारोह के दौरान पत्रकारों से बात करते हुए, सरमा ने कहा कि पिछले सप्ताह शुरू हुए इस विशाल बांध के वास्तविक प्रभाव के बारे में अभी ठीक से जानकारी नहीं है क्योंकि इसे लेकर अलग-अलग धारणाएँ बनाई जा रही हैं। उन्होंने उम्मीद जताई कि केंद्र सरकार इस मामले में चीन के संपर्क में रहेगी। चीन ने पिछले शनिवार को अरुणाचल प्रदेश में भारतीय सीमा के पास ब्रह्मपुत्र नदी पर 167.8 अरब डॉलर की लागत से बनने वाले एक विशाल जलविद्युत बांध का औपचारिक निर्माण शुरू कर दिया है, जिसे तिब्बत में यारलुंग जंगबो के नाम से जाना जाता है। इस परियोजना में पाँच जलप्रपात जलविद्युत स्टेशन शामिल हैं, जिसने भारत और बांग्लादेश जैसे निचले इलाकों के देशों में जल सुरक्षा और पारिस्थितिक प्रभावों को लेकर चिंताएँ पैदा कर दी हैं। सरमा ने यहां एक समारोह से इतर संवाददाताओं से कहा कि पिछले सप्ताह शुरू हुए इस विशाल बांध से वास्तव में क्या प्रभाव पड़ेगा, फिलहाल इसकी ठोस जानकारी नहीं है क्योंकि अलग-अलग बातें कही जा रही हैं। उन्होंने उम्मीद जताई कि केंद्र सरकार इस मामले में चीन के संपर्क में रहेगी। शर्मा ने यहां संवाददाताओं से कहा, मैं फिलहाल चिंतित नहीं हूं क्योंकि ब्रह्मपुत्र एक विशाल नदी है और यह किसी एक स्रोत (पानी) पर निर्भर नहीं है। बांध के कारण असम में नदी के निचले क्षेत्र पर संभावित प्रभाव के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि यह अभी तक स्पष्ट नहीं है कि यह सकारात्मक रहेगा या नकारात्मक। उन्होंने कहा, ब्रह्मपुत्र को अपना अधिकांश पानी भूटान, अरुणाचल प्रदेश और हमारे राज्य से वर्षा जल और अन्य जल स्रोतों से मिलता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि चीन द्वारा बांध के संबंध में दो वैज्ञानिक दृष्टिकोण सामने आए हैं। उन्होंने कहा, पहला - अगर चीन ब्रह्मपुत्र के प्रवाह को बाधित करता है तो पानी कम हो सकता है और परिणामस्वरूप जैव विविधता प्रभावित होगी।

> असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने सोमवार को ब्रह्मपुत्र पर दुनिया के सबसे बड़े बांध के निर्माण के चीन के कदम पर आशंकाओं को कम करने की कोशिश की और कहा कि उन्हें तत्काल चिंता की कोई बात नहीं दिखती क्योंकि नदी को अपना अधिकांश पानी भूटान और अरुणाचल प्रदेश से मिलता है।

तेजस्वी यादव ने की एसआईआर पर बहस की मांग, सरकार को दी चेतावनी

एजेंसी

नई दिल्ली , राजद विधायक तेजस्वी यादव ने सोमवार को बिहार विधानसभा सत्र में राज्य में मतदाता सूची के चल रहे विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) पर चर्चा की माँग की। पत्रकारों से बात करते हुए तेजस्वी यादव ने कहा कि आज विधानसभा सत्र शुरू हो गया है... हमारी माँग है कि विधानसभा में विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) पर चर्चा हो। उन्होंने आगे कहा कि पार्टी यह सुनिश्चित करने के लिए संघर्ष करेगी कि कोई भी गरीब मतदाता अपने मताधिकार से वंचित न रहे।

यादव ने कहा कि बिहार लोकतंत्र का उद्गम स्थल है और अगर कोई यहाँ लोकतंत्र को खत्म करने की कोशिश करेगा, तो हम चुप नहीं बैठेंगे। हम यह सुनिश्चित करने के लिए यह लड़ाई लड़ेंगे कि हमारे गरीब अपने मताधिकार से वंचित न हों और उनका अस्तित्व मिट न जाए।

बिहार विधानसभा का सत्र आज सुबह शुरू हो गया। इस बीच, भारत निर्वाचन आयोग (ईसीआई) इस साल के अंत में होने वाले बिहार विधानसभा चुनावों से पहले मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) कर रहा है।

> यादव ने कहा कि बिहार लोकतंत्र का उद्गम स्थल है और अगर कोई यहाँ लोकतंत्र को खत्म करने की कोशिश करेगा, तो हम चुप नहीं बैठेंगे। हम यह सुनिश्चित करने के लिए यह लड़ाई लड़ेंगे कि हमारे गरीब अपने मताधिकार से वंचित न हों और उनका अस्तित्व मिट न जाए।

सम्पादकीय

मानसून सत्र में कृपया सार्थक चर्चा करें, हंगामा न तो राजनीति और न ही लोकतंत्र के लिए शुभ

यदि संसद में सकारात्मक चर्चा नहीं होगी और कानूनों के निर्माण का मूल कार्य ढंग से नहीं किया जाएगा तो फिर कहां किया जाएगा ? यह एक तथ्य है कि संसद में अब सार्थक चर्चा का अभाव ही अधिक देखने को मिलता है। यह न तो राजनीति के लिए शुभ है न लोकतंत्र के लिए और न ही आम जनता के लिए।यह अच्छी बात है कि संसद के मानसून सत्र में सरकार पहलगाम में आतंकी हमले के जवाब में पाकिस्तान के खिलाफ किए गए आपरेशन सिंदूर पर चर्चा को तैयार है। इस तैयारी के अनुरूप सरकार का कार्य और व्यवहार होना भी चाहिए और दिखना भी। इसी तरह विपक्ष को भी आपरेशन सिंदूर और इससे जुड़े अन्य विषयों पर गंभीर चर्चा के लिए तत्पर दिखना होगा।इससे संतुष्ट नहीं हुआ जा सकता कि दोनों सदनों के सुचारु संचालन के लिए सर्वदलीय बैठक में पक्ष-विपक्ष के बीच इस विषय पर सहमति बनी, क्योंकि अभी तक का अनुभव यही बताता है कि संसद सत्र के पहले आयोजित होने वाली सर्वदलीय बैठकों में कहा-बताया कुछ जाता है और लोकसभा एवं राज्यसभा में कुछ और देखने को मिलता है। आमतौर पर यह कुछ और नहीं, बल्कि हल्ले एवं हंगामे के रूप में देखने को मिलता है।संसद के भीतर अथवा बाहर किसी विषय पर चर्चा में महत्वपूर्ण यह होता है कि उस पर किस इरादे से पक्ष-विपक्ष के नेता अपनी बात कह रहे हैं। कई बार ये इरादे वैसे नहीं होते, जैसे प्रचारित किए जाते हैं। कभी सत्तापक्ष विपक्ष के विषयों को अनावश्यक समझता है और कभी विपक्षी दल विरोध के लिए विरोध की राजनीति करते दिखते हैं।अब तो ऐसा अधिक दिखता है कि कई विपक्षी नेताओं का एकमात्र उद्देश्य हंगामा करना होता है। सत्ता पक्ष भी उनके उद्देश्य को पूरा करना बेहतर समझता है। इसके नतीजे में किसी भी मुद्दे पर सकारात्मक एवं सार्थक चर्चा नहीं हो पाती। स्थिति यह है कि राष्ट्रीय महत्व के कई विधेयकों पर भी ढंग से चर्चा नहीं होती। वे या तो लंबित पड़े रहते हैं अथवा हंगामे के बीच जैसे-तैसे पास हो जाते हैं। जब ऐसा होता है तब विपक्ष यह शोर मचाता है कि बहुमत के बल पर विपक्ष की आवाज को दबा दिया गया और अब तो ऐसा अक्सर सुनने को मिलता है कि देश में लोकतंत्र के नाम पर एक तरह की तानाशाही चल रही है। यह बात वह कांग्रेस खासतौर पर कहती है, जो सचमुच तानाशाही के रास्ते पर चली थी। तब उसकी तानाशाही का विरोध करने वाले कई दल आज उसके साथ खड़े हैं और उसकी ही भाषा बोल रहे हैं।कई बार तो विपक्षी दल ऐसी भाषा बोल जाते हैं जो पाकिस्तान, चीन को रास आती है। इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि पहलगाम आतंकी हमले और आपरेशन सिंदूर पर विपक्षी दलों के नेताओं की ओर से ऐसे कई बयान दिए भी गए थे।

आज का विचार

राशिफल

मेष राशि: नौकरी करने वाले लोग अपने कामकाज में अधिक व्यस्त रहेंगे, जिससे कार्यस्थल पर आपकी सराहना भी की जाएगी। सरकारी नौकरी की तैयारी करने वालों को कोई अच्छी खबर सुनने को मिल सकते हैं।

वृषभ राशि: आपको कार्यस्थल पर कई प्रकार की रुकावटों और समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। लेकिन आप अपने सहयोगियों की मदद से इन मुश्किलों से आसानी से बाहर निकल जाएंगे।

मिथुन राशि : अगर आपकी कोई कीमती और खास चीज बहुत पहले खो गई थी, तो वह अब वापस मिल सकती है। इससे मन प्रसन्न रहेगा। वहीं, अगर आपने पहले के समय में किसी व्यक्ति के धन उधार दिया था, तो वह भी अब वापस मिलने की संभावना है।

कर्क राशि : आपको पूरे दिन में कई बदलाव देखने को मिल सकते हैं। अगर कोई नया काम शुरू कर रहे हैं, तो शुरूआत में कुछ रुकावटों का सामना करना पड़ सकता है। लेकिन दिन बीतने के साथ-साथ आपके बिगड़े काम बनने लगेंगे, जिससे मन को शांति महसूस होगी।

सिंह राशि : अगर किसी प्रॉपर्टी से जुड़े मामले में फंसे थे तो वे अब हल हो सकते हैं। नौकरी करने वालों की आय में बढ़ोतरी होगी। लेकिन साथ ही खर्च भी बढ़ सकते हैं।

कन्या राशि : आप दिनभर जोश और ऊर्जा से भरपूर रहेंगे। कार्यक्षेत्र में आपके सहयोगी अच्छे और शांत मूड में रहेंगे। साथ ही, वे ज्यादा काम करने का मन भी बना सकते हैं। व्यापार में बदलाव के लिए आप खुद के भीतर की प्रतिभा को बाहर निकालने और समझने की कोशिश कर सकते हैं।

तुला राशि: समाज में आपके मान-सम्मान में वृद्धि होगी। इसके लिए लोगों द्वारा कोई आयोजन करने की भी संभावना बन रही है। कार्यक्षेत्र में विरोधी आपके खिलाफ जो भी योजनाएं बना रहे थे, वे सभी फेल हो जाएंगी और आप विजय प्राप्त करेंगे। आर्थिक मामले में भी आपके लिए आज का दिन शुभ रहेगा।

वृश्चिक राशि : आपको सामाजिक कार्यों के द्वारा कुछ नए उद्देश्य प्राप्त हो सकते हैं। नौकरी करने वालों के लिए कार्यस्थल का माहौल सकारात्मक बना रहेगा, जिससे आप शांति से अपना काम कर पाएंगे।

धनु राशि: आपको अपने कार्यस्थल के कुछ बदले माहौल से परेशानी हो सकती है। इसी के चलते काम करने में मुश्किल का सामना करना पड़ सकता है।

मकर राशि : व्यापार के मामले में आपकी मेहनत रंग ला सकती है। आज जो भी काम पूरी मेहनत और लगन से करेंगे, उसमें उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे। अगर आर्थिक मामले में पिछले दिनों कुछ नुकसान हुए थे तो अब उनकी भरपाई हो सकती है। बिजनेस करने वालों को अपने कार्यस्थल पर थोड़ी सावधानी बरतनी होगी। लव लाइफ बिता रहे लोग अपने पार्टनर के साथ कहीं घूमने जाने का प्लान बना सकते हैं, जिससे आपकी खुशी दोगुनी हो जाएगी।

कुंभ राशि: आपका दिन थोड़ी मुश्किलों भरा हो सकता है। किसी बात से मन बेचैन रहेगा, जिसका प्रभाव आपके काम धंधे पर भी देखने को मिलेगा। नौकरी करने वाले लोग अपने कामकाज में व्यस्त रहेंगे। व्यापार के मामले में आपको एक ही दिन में एक साथ कई काम पूरे करने पड़ सकते हैं।

मीन राशि: व्यापार के मामले में आपको किसी भी प्रकार के सौदे या पैसों की लेनदेन में सावधान रहना होगा। ज्यादा स्ट्रेस लेने से बनता काम बिगड़ सकता है। खर्चों में बढ़ोतरी हो सकती है, जिसे नियंत्रित करना जरूरी होगा। इसके लिए आपको संयम के साथ बजट बनाकर चलना होगा। ऐसा करने से भविष्य में आर्थिक तंगी का सामना नहीं करना पड़ेगा। कार्यक्षेत्र में दोस्तों के सहयोग से आप किसी प्रोजेक्ट को पूरा कर सकते हैं।

ज्योतिष सेवा केन्द्र
ज्योतिषाचार्य पंडित अतुल शास्त्री

विश्व के लिए खतरनाक होगा टैरिफ का दांव, भारत को अपनी कूटनीति पर लगाना होगा दांव

इस खेल में भारत को कूटनीतिक निपुणता के साथ चीन के साथ मिलकर चलना होगा क्योंकि ट्रंप उसी की सुनते हैं जिसके पास पलटवार की क्षमता होती है। चीन के पास पलटवार के लिए दुर्लभ खनिज हैं और रूस के पास तेल और अनाज। ऐसे में भारत को अपनी कूटनीति पर दांव लगाना होगा।

पा शातिर गजनवी की मशहूर गजल का मतला है–गो जरा सी बात पर बरसों के याराने गए। पुतिन और ट्रंप के बीच हाल में कुछऐसा ही हुआ है। हां, बात केवल इतनी ही नहीं है। 2013 की मिस यूनिवर्स सौंदर्य प्रतिस्पर्धा को लेकर मास्को गए ट्रंप ने रूसी अरबपतियों और राष्ट्रपति पुतिन की खातिरदारी से अभिभूत होकर कहा था कि वे राष्ट्रपति ओबामा से भी अधिक प्रभावशाली हो चुके हैं। पुतिन का रंग उन पर इतना गहरा चढ़ा कि राष्ट्रपति बनने के बाद 2018 के हेलसिंकी शिखर सम्मेलन में उन्होंने अपने खुफिया तंत्र के खिलाफ पुतिन का पक्ष लेते हुए यह मानने से इन्कार कर दिया कि रूस ने अमेरिकी चुनाव में गड़बड़ी कराई थी। पुतिन के साथ अपने खास रिश्ते का दम भरते हुए उन्होंने कहा कि वे राष्ट्रपति बनने के 24 घंटों के भीतर युद्धविराम करा देंगे। जब वह नहीं हुआ तो उन्होंने रूस के प्रतिबंध हटाने और क्रीमिया को रूस के भाग के रूप में मान्यता देने जैसे प्रलोभन देकर पुतिन को मनाने की कोशिशें कीं। जंग का ठीकरा जेलेंस्की के सिर फोड़ा, उन्हें तानाशाह बताते हुए व्हाइट हाउस में मीडिया के सामने बुरा-भला कहा। उन्होंने यूक्रेन की सैन्य और आर्थिक मदद रोक ली और बिना शर्त बातचीत के लिए राजी किया। युद्ध विराम के लिए ट्रंप ने पुतिन के साथ छह बार फोन-वार्ताएं कीं, परंतु पुतिन न केवल बात लटकाते रहे, बल्कि हर बातचीत के बाद बड़े-बड़े हमले करते रहे। इस महीने की बातचीत के बाद ट्रंप का पुतिन से मोहभंग हो गया और

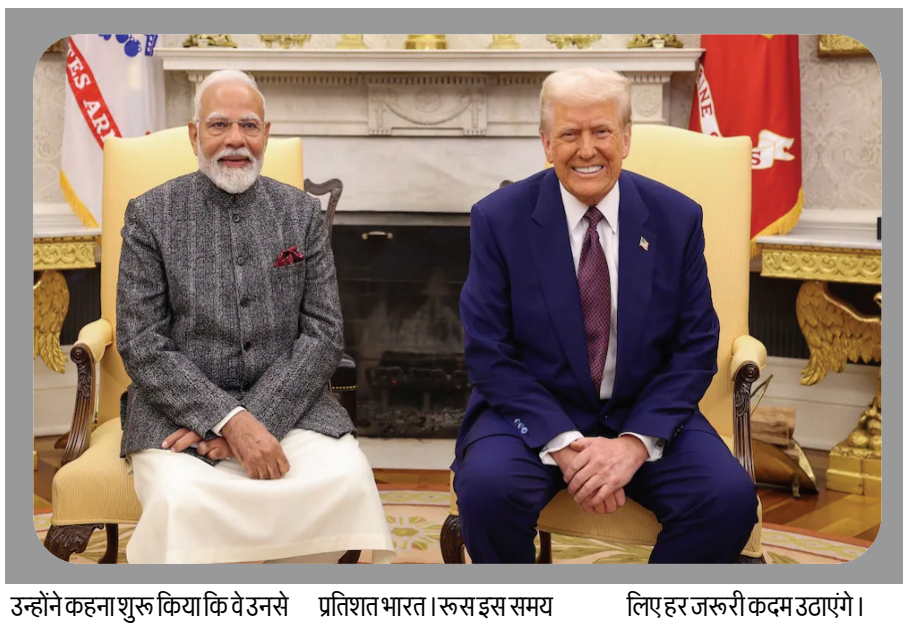

उन्होंने कहना शुरू किया कि वे उनसे नाखुश हैं। बीबीसी को दिए इंटरव्यू में ट्रंप ने कहा कि वे पुतिन से निराश हैं, पर हताश नहीं। उन्होंने यूक्रेन को नाटो के माध्यम से अधुनातन रक्षा प्रणाली और मिसाइलें देना शुरू करने का एलान किया और पुतिन को चेतावनी देते हुए कहा कि यदि वे 50 दिनों के भीतर युद्ध विराम के लिए राजी नहीं हुए तो रूसी माल खरीदने वाले देशों पर 100 प्रतिशत टैरिफ जैसे कड़े आर्थिक प्रतिबंध लगाए जाएंगे। नाटो महासचिव मार्क रूटा ने तो चीन, भारत और ब्राजील को सीधे ही कह दिया कि या तो तीनों मिलकर पुतिन को युद्ध विराम के लिए राजी करें, अन्यथा अमेरिकी प्रतिबंधों के लिए तैयार हो जाएं। यूरोपीय संघ ने रूस पर नए प्रतिबंध लगा दिए हैं और अमेरिकी सीनेट रूस से तेल खरीदने वाले देशों पर 500 प्रतिशत तक टैरिफ लगाने वाले प्रस्ताव की तैयारी कर रही है। रूस प्रतिदिन लगभग 70 लाख बैरल तेल का निर्यात करता है, जिसका 47 प्रतिशत चीन खरीदता है और 38 प्रतिशत भारत। रूस इस समय दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा तेल उत्पादक देश है। उसके तेल की बिक्री बंद होने से दुनिया में तेल की कीमतों में भारी बढ़ोतरी हो सकती है, जिसका असर चीन और भारत पर तो पड़ेगा ही, यूरोप और अमेरिका भी उससे अछूते नहीं रह पाएंगे, क्योंकि तेल की कीमतों में उछाल से महंगाई बढ़ेगी और दुनिया की अर्थव्यवस्था संकट में पड़ जाएगी। इससे रूस का नुकसान तो तब होगा जब चीन, भारत और ब्राजील तेल खरीदना बंद करेंगे। हालांकि तेल की कीमतें बढ़ने से रूस को फायदा होना तुरंत शुरू हो गया है। वैसे भी पुतिन को लगता है कि ट्रंप की धमकी गीदड़भभकी के सिवा कुछ नहीं है। इसलिए पुतिन ने यूक्रेन पर 700 ड्रोन और दर्जन भर मिसाइलों से बड़ा हमला किया। अमेरिकी चेतावनी के जवाब में रूसी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता जखारोवा ने भी कहा कि अल्टीमेटम, ब्लैकमेल और धमकियां हमें मंजूर नहीं हैं। हम अपनी सुरक्षा और हितों की रक्षा के लिए हर जरूरी कदम उठाएंगे। रूसी शेयर बाजार में भी घबराहट की जगह तेजी दिखाई दी। ट्रंप का पुतिन से मोहभंग होना तो समझ में आता है, परंतु आर्थिक प्रतिबंधों के जिस हथियार से बाइडन कुछ हासिल नहीं कर पाए तो उसी को दोबारा चलाने का मकसद क्या हो सकता है? सुप्रसिद्ध इतिहासकार युवाल नोआ हरारी के अनुसार ट्रंप किलेबंदी की मानसिकता से काम करते हैं। उनकी नीतियों में किसी न किसी ठोस प्राप्ति का स्वार्थ छिपा रहता है। यूक्रेन की सैनिक मदद के लिए उन्होंने नाटो को माध्यम बनाया, ताकि यूक्रेन को हथियार मिल जाएं और उन्हें नाटो के जरिये उनके दाम। ट्रंप दावा कर चुके हैं कि चीन के साथ सैद्धांतिक रूप से व्यापार सौदा हो चुका है, परंतु उस दावे को तीन हफ्ते बीत चुके हैं, लेकिन सौदे पर मुहर नहीं लग पाई है। उन्होंने भारत के साथ भी सौदा हो जाने का संकेत दिया है। अलबत्ता औपचारिक रूप से कोई घोषणा नहीं हुई है।हो सकता है कि इन्हीं व्यापार सौदों को मनमुताबिक और जल्दी निपटाने के लिए रूसी तेल खरीदने वालों पर टैरिफ लगाने की चेतावनी दी जा रही हो। वरना यह बात पुतिन भी जानते हैं और ट्रंप भी कि शी चिनफिंग भी ट्रंप की धमकी में आकर रूस से तेल लेना बंद नहीं करने वाले। वे टैरिफ जंग में भी नहीं झुके, क्योंकि चीन के पास दुर्लभ खनिजों, चुंबकों और सेमीकंडक्टरों का ब्रह्मास्त्र था। उसके साथ आखिरकार ट्रंप को ही सौदा पटाना पड़ा। ट्रंप समझ चुके हैं कि सवा लाख से अधिक सैनिकों और अर्थव्यवस्था की बलि चढ़ा चुके पुतिन को बातों और धमकियों से पीछे हटाना संभव नहीं है। न ही वे इस अंतहीन लड़ाई में यूक्रेन के लिए अमेरिकी खजाना खोलने को तैयार हैं। इसलिए उन्होंने नाटो के जरिये हथियार बेचने का रास्ता चुना है, ताकि यूक्रेन अपनी रक्षा करते हुए रूसी सेना और रक्षा तंत्र को इतनी चोट पहुंचाता रहे कि एक दिन पुतिन थककर बातचीत के लिए विवश हो जाएं। दूसरी ओर, पुतिन का लक्ष्य यूक्रेन की सैनिक और खुफिया शक्ति और रक्षा उद्योग को तबाह कर उसे ऐसे नाकाम राज्य में बदल देना है जहां रूसी हमलों के भय से कोई निवेश न करे और वह रूस पर आश्रित होकर रह जाए। इस खेल में भारत को कूटनीतिक निपुणता के साथ चीन के साथ मिलकर चलना होगा, क्योंकि ट्रंप उसी की सुनते हैं जिसके पास पलटवार की क्षमता होती है। चीन के पास पलटवार के लिए दुर्लभ खनिज हैं और रूस के पास तेल और अनाज। ऐसे में भारत को अपनी कूटनीति पर दांव लगाना होगा।

स्त्रियों के आर्थिक विकास से जुडी राष्ट्र की मुख्य धारा

भारत में महिलाओं के विकास का अति संवेदनशील एवं महत्वपूर्ण प्रश्न स्वतंत्रता एवं भारत की मुक्ति के साथ अनिवार्य रूप से जुड़ गया है स्वतंत्र काल से जुड़ी हुई महिला सशक्तिकरण की यात्रा आज तक अनवरत जारी है आज भी महिलाएं सामाजिक राजनीतिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक सभी मोर्चों और सवालों पर पुरुषों के समकक्ष संघर्ष करती नजर आ रही है आज राष्ट्र निर्माण में नारी अपनी भूमिका से न केवल परिचित है बल्कि उसकी गंभीर जिम्मेदारी का निर्वहन करने के लिए भी तत्पर व सक्षम है वर्तमान में भारत विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्थाओं में से एक है भारत विकास की दर आज बड़ी से बड़ी वैश्विक शक्ति से टक्कर लेने की जद पर है विकास की गाथा में देश की आधी आबादी यानी महिलाओं की भूमिका बढ़ती जा रही है अनेक सामाजिक आर्थिक विसंगतियों के बावजूद आज हर मोर्चे पर महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी होती दिखाई दे रही है यह आत्मविश्वास उन्हें सदियों के संघर्ष के बाद हासिल हुआ है, प्राचीन काल में अपाला तथा गोसा जैसी विदुषी महिलाओं ने अपनी कीर्ति पताका फैलाई थी, भारतीय समाज में उन्हें सम्मान और बराबरी का दर्जा दिया गया है ,परंतु मध्यकाल में भारत अपनी संकुचित एवं संकट दृष्टि का शिकार हो गया था महिलाओं को घर की चारदीवारी में क्या होना पड़ा था इसी के साथ कैद हो गई थी उनकी योग्यता, ऊर्जा, शक्ति, आकांक्षाएं और व्यक्तित्व विकास की संभावनाएं भारत एवं भारत के बाहर विदेशों में भारतीय मूल की ऐसे सैकड़ों महिलाएं हैं जिन्होंने भारत देश का नाम रोशन किया है उनके नाम की सूची बड़ी लंबी है उनका उल्लेख न करते हुए समग्र रूप से उनका नमन करते हुए यह बताना चाहूंगा कि महिलाएं निरंतर उच्च पदों पर आसीन हो रही है इन सब के साथ सबसे पुराने बजट तथा घर के अर्थशास्त्र को संभालने की भूमिका का भी कुशलतापूर्वक सदियों से प्रबंधन करती आ रही है इसके साथ ही वे अपनी शैक्षणिक योग्यता में निरंतर सुधार कर रही है जनसंख्या गणना के आंकड़े भी इसकी पुष्टि करते हैं, महिलाएं जहां शिक्षा, प्रशासन, मेडिकल क्षेत्र, इंजीनियरिंग, स्पेस रिसर्च, विज्ञान टेक्नोलॉजी और उद्यानिकी ,एग्रीकल्चर, सेरीकल्चर और तमाम क्षेत्रों में असाधारण रूप से शिक्षा प्राप्त कर प्रगति कर रही और उच्च पदस्थ होकर कार्यों का कुशलता से संपादन कर रही हैं सामाजिक कुरीतियों के विरोध में समाज को आगाह करने और उसका विरोध करने में भी महिलाएं पीछे नहीं है, फिर चाहे वह शनि सिंगनापुर हाजी अली दरगाह या तीन तलाक के मामले में इनकी सजगता ने सामाजिक परिवर्तन लाया है। सरकार भी इनकी इस भूमिका को स्वीकार करते हुए थल जल और वायु सेना में युद्धक की भूमिका मैं इनकी नियुक्ति कर रही है। हम यदि राजनीतिक क्षेत्र की चर्चा करें तो पंचायती स्तरों पर महिला प्रधानों ने गंभीर परिवर्तन के प्रयास किए, किंतु हमें यहां हमेशा स्मरण रखना चाहिए की देश के आर्थिक विकास में अभी भी महिलाओं को वह भागीदारी व सम्मान नहीं मिल पा रहा है जिसके लिए वह पूर्णरूपेण हकदार है। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन ने अपनी एक रिपोर्ट में बताया की श्रम बल भागीदारी में महिलाओं की भागीदारी 25% से भी कम हो गई है। महिलाओं को अनेक सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक चुनौतियों का भी सामना करना पड़ रहा है। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की रिपोर्ट के अनुसार महिलाओं को समान पदों पर कार्यरत पुरुषों की तुलना में कम वेतन दिया जाता है तथा अधिकांश शीर्ष पदों पर पुरुषों का कब्जा है के अलावा दुनिया की सबसे कम तनखा वाली नौकरियों में 60% महिलाएं ही हैं। महिलाओं द्वारा अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाते हुए कार्यस्थल पर कार्य करते हुए देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है इन परिस्थितियों में महिलाओं द्वारा दिए गए सामाजिक आर्थिक विकास के योगदान को पहचानते हुए सरकार ने मातृत्व लाभ अधिनियम 2016 तथा यौन उत्पीड़न अधिनियम 2013 के माध्यम से अनुकूल वातावरण तथा महिलाओं को मातृत्व अवकाश देने के कई अच्छे प्रावधान भी उपलब्ध कराए हैं। इंटरनेशनल मॉनिटरी फंड अपने आंकड़ों से स्पष्ट करता है की किस प्रकार महिलाओं की श्रमबल में अधिक भागीदारी जीडीपी में अप्रत्याशित वृद्धि करता है। पूरा विश्व इस बात से सहमत है की महिलाएं कोमल है पर कमजोर नहीं एवं शक्ति का नाम ही नारी है। हिंदुस्तान के विकास में सही मायने में यदि 50% भागीदारी महिलाओं की हो तो असाधारण क्षमता की धनी महिलाएं इस देश को विश्व के अन्य विकसित देशों में खड़ा कर सकती हैं, जरूरत इनकी शक्ति क्षमता एवं योग्यता को पहचानने की है। 21वीं सदी में विश्व शक्ति रूप भारत के सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक विकास में महिलाओं का सर्वांगीण विकास को आधार बनाकर आर्थिक महाशक्ति के स्वप्न को साकार किया जा सकता है।

पाक प्रेरित आतंकवाद पर बदलते अमेरिकी-चीनी रूख के वैश्विक मायने

कमलेश पांडेय

दुनिया के थानेदार अमेरिका ने पाकिस्तान समर्थित और भारत के पहलगाम आतंकी हमले के गुनहगार ₹द रेसिस्टेंस फ्रंट₹ को वैश्विक आतंकी संगठन घोषित करके भारत से हाल ही में बेपटरी होते जा रहे कूटनीतिक सम्बन्धों को संभालने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल की है। इससे जहां पाकिस्तान और चीन को करारा झटका लगा है, वहीं अमेरिका के इस हृदय परिवर्तन से यह स्पष्ट हो चुका है कि दुनिया के दोनों ध्रुवों को एक साथ साधते रहने की कोशिश करने वाले भारत के ताजा कूटनीतिक प्रयासों की जीत हुई है, लेकिन अभी भी पहलगाम आतंकी हमले के दोषियों को न्याय के कटघरे में लाया जाना बाकी है। बता दें कि टीआरएफ पाकिस्तान के लश्कर-ए-तैयबा का ही एक चेहरा यानी प्रॉक्सी संगठन है। जब लश्कर और उसके सरगना हाफिज सईद पर कार्रवाई के लिए पाकिस्तान पर वैश्विक दबाव बढ़ने लगा, तो 2019 में उसने टीआरएफ को प्रॉक्सी के तौर पर खड़ा कर दिया। यह जम्मू-कश्मीर में आतंकियों की घुसपैठ ही नहीं, हथियारों और ड्रग्स की तस्करी में भी शामिल है। सरकार ने 2023 में इस पर बैन लगाया था। उल्लेखनीय है कि टीआरएफ को संसाधन और समर्थन दे रहा लश्कर-ए-तैयबा पहले ही ग्लोबल टेररिस्ट ग्रुप घोषित किया जा चुका है। इसी तरह आतंकी मसूद अजहर के जैश-ए-मोहम्मद पर भी प्रतिबंध लगे हुए हैं। इसके बावजूद, ये दोनों आतंकवादी संगठन सक्रिय हैं। दिखाने के लिए हाफिज सईद को जेल में रखा गया है, लेकिन उसकी गतिविधियां पहले की तरह जारी हैं।यही वजह है कि लश्कर या जैश जैसे आतंकी संगठन अमेरिकी प्रतिबंधों के बावजूद खत्म नहीं हो पा रहे हैं, क्योंकि उन्हें पाकिस्तान की तरफ से निरंतर खुराफाती खुराक मिलती आई है। आलम यह है कि जब इस्लामाबाद पर अमेरिकी दबाव बढ़ता है, तो वह दिखावटी कदम उठा लेता है और आतंकवाद का कोई एक नया चेहरा तैयार कर दिया जाता है। इसलिए टीआरएफ के मामले में अमेरिका को पाकिस्तान के सामने यह मुद्दा उठाना चाहिए कि लश्कर पर बैन होने के बावजूद कैसे उसने एक दूसरा फ्रंट बना लिया?

दरअसल, सीमापार आतंकवाद को लेकर वॉशिंगटन का

नजरिया भारत से बिल्कुल अलग दिखता है। तभी तो पहलगाम आतंकी हमले के पीछे पाकिस्तानी सेना प्रमुख असीम मुनीर की भी स्पष्ट भूमिका दिखाई देने के बावजूद कुछ ही दिनों बाद डॉनल्ड ट्रंप व्हाइट हाउस में उनकी मेजबानी करते दिखे। इसलिए यदि अमेरिका टीआरएफ पर बैन का कोई सार्थक नतीजा देखना चाहता है, तो उसे पाकिस्तानी सेना पर प्रेशर बनाना चाहिए। कहना न होगा कि पहलगाम आतंकी हमले और पाकिस्तान के बीचकनेक्शन के कई सबूत सामने आए हैं। इसलिए टीआरएफ पर एक्शन का इस्तेमाल भारत को पाकिस्तान की घेरेबंदी करने और वैश्विक मंच पर उसे बेनकाब करवाने में करना चाहिए। सबसे खास बात यह है कि पहलगाम आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान को करारा जवाब दिए जाने हेतु शुरू किए गए 'ऑपरेशन सिंदूर' की सफलता के बाद चीन के साथ-साथ भारत के चतुर्गुट (कवाड) सहयोगी देश अमेरिका ने भी जब पाकिस्तान की पहले परोक्ष, फिर प्रत्यक्ष तरफदारी की तो भारतीय कूटनीति पर सवाल उठने लगे थे। हालांकि, अमेरिका को पता है कि पाकिस्तान अब उससे ज्यादा चीन के इशारे पर खेलता है। इसी चक्कर में अमेरिका को अफगानिस्तान भी गंवाना पड़ा। यही वजह है कि जैसे वह पाकिस्तान से करीबी दिखाना शुरू किया, भारत ने अमेरिका से दूरी बनानी और नीतिगत परहेज शुरू कर दिया।

मुंबई एयरपोर्ट पर हादसा, फिसलने के बाद रनवे से बाहर आया एयर इंडिया का विमान, एक हिस्सा क्षतिग्रस्त

मुंबई के छत्रपति शिवाजी टर्मिनल पर एयर इंडिया का विमान लैंडिंग के दौरान फिसल गया। कोच्चि से मुंबई आए इस विमान के फिसलने से उसका एक हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया।

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

मुंबईः महाराष्ट्र के मुंबई में छत्रपति शिवाजी टर्मिनल पर एयर इंडिया का विमान फिसल गया। जानकारी के अनुसार फिसलने के कारण केरल के कोच्चि से मुंबई आए इस विमान का एक हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया। जानकारी के अनुसार ये हादसा लैंडिग के दौरान हुआ। विमान फिसलकर रनवे के बाहर आ गया। शुरूआती जांच के बाद बताया जा रहा है कि रनवे पर पानी और बारिश के कारण यह हादसा हुआ।इस हादसे को लेकर एयर इंडिया के प्रवक्ता ने कहा कि तेज बारिश के कारण लैंडिंग के बाद विमान रनवे से थोड़ा फिसल गया।पायलट ने स्थिति को संभाला और विमान को सुरक्षित गेट तक पहुंचाया गया। सभी यात्री सुरक्षित हैं। विमान की जांच की जा रही है।सभी यात्री और क्रू मेंबर सुरक्षितएयर इंडिया के अनुसार, इस हादसे में किसी को चोट नहीं आई है। विमान में मौजूद सभी यात्रियों और क्रू मेंबर्स को सुरक्षित उतार लिया गया। घटना के बाद विमान की तकनीकी जांच की जा रही है। एयर इंडिया ने कहा है कि यात्रियों और क्रू की सुरक्षा उनकी पहली प्राथमिकता है। टीओआई के अनुसार, यह घटना सुबह 9:27 बजे एयर इंडिया की उड़ान अक-2744 के साथ हुई। विमान रनवे पर उतरने के बाद धीमा होने के दौरान नियंत्रण खो बैठा। विमान को थोड़ा नुकसान हुआ है।

मुंबई लोकल ब्लास्ट के सभी 12 आरोपियों को बरी करने के हाईकोर्ट के फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट जाएगी महाराष्ट्र सरकार, फडणवीस का ऐलान

महाराष्ट्र की सरकार 2006 के मुंबई ट्रेन विस्फोट मामले में बड़ा कदम उठाने जा रही है। बॉम्बे हाईकोर्ट ने इस मामले के सभी 12 आरोपियों को बरी कर दिया था। ऐसे में अब मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा है कि सरकार इस फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में अपील करेगी।

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

मुंबईः महाराष्ट्र सरकार 2006 के मुंबई ट्रेन विस्फोट मामले में बड़ा कदम उठाने जा रही है। बॉम्बे हाईकोर्ट ने इस मामले के सभी 12 आरोपियों को बरी कर दिया था। ऐसे में अब मुख्यमंत्री देवेंद्र फड़नवीस ने कहा है कि सरकार इस फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में अपील करेगी। इस फैसले में 180 से ज्यादा लोगों की जान चली गई थी। सरकार का मानना है कि पीड़ितों को न्याय मिलना चाहिए और दोषियों को सजा मिलनी चाहिए।बम धमाके में मारे गए थे 180 से अधिक लोगदरअसल महाराष्ट्र सरकार 11 जुलाई 2006 को मुंबई में हुए ट्रेन धमाकों के मामले को लेकर गंभीर है। 11 जुलाई को पश्चिमी लाइन पर अलग-अलग स्थानों पर मुंबई की कई लोकल ट्रेन में सिलसिलेवार तरीके से सात विस्फोट हुए थे। इनमें 180 से अधिक लोग मारे गए थे और कई अन्य घायल हुए थे। बॉम्बे हाईकोर्ट ने 19 साल बाद सोमवार को सभी 12 आरोपियों को बरी कर दिया। कोर्ट ने कहा कि अभियोजन पक्ष मामले को साबित करने में पूरी तरह विफल रहा और यह विश्वास करना मुश्किल है कि उन्होंने अपराध किया है।

फडणवीस ने कहा- सुप्रीम कोर्ट जाएगी सरकार

जस्टिस अनिल किलोर और जस्टिस श्याम चांडक की स्पेशल बेंच ने कहा कि अभियोजन पक्ष अपराध में इस्तेमाल किए गए बमों के प्रकार को भी रिकॉर्ड में लाने में विफल रहा और जिन सबूतों पर उसने भरोसा किया है। वे आरोपियों को दोषी ठहराने के लिए निर्णायक नहीं हैं। कोर्ट के इस फैसले पर मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि महाराष्ट्र सरकार मुंबई ट्रेन विस्फोट के सभी 12 आरोपियों को बरी करने के हाईकोर्ट के फैसले के खिलाफ उच्चतम न्यायालय का रुख करेगी।

चंद्रशेखर बावनकुले ने क्या कहा?

इससे पहले पत्रकारों से बातचीत में बीजेपी के वरिष्ठ नेता चंद्रशेखर बावनकुले ने कहा कि महाराष्ट्र सरकार सभी आरोपियों को बरी करने के हाईकोर्ट के फैसले को चुनौती देने से पहले मामले के गुण-दोष का आकलन करेगी। उससे पहले हम फैसले के गुण-दोष और बरी किए जाने के कारणों जैसे पहलुओं पर चर्चा करेंगे। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस भी इस पर गौर करेंगे। आकलन के बाद ही राज्य सरकार सुप्रीम कोर्ट का रुख करेगी। भारतीय जनता पार्टी की महाराष्ट्र इकाई के पूर्व अध्यक्ष बावनकुले ने कहा कि अगर राज्य के पास कोई अतिरिक्त जानकारी है, तो मुख्यमंत्री फडणवीस उसे विस्तार से पेश करेंगे।

फास्ट ट्रैक

खत्म नहीं होगा ठाकरे ब्रांड...ये क्या बोल गए शिंदे के मंत्री प्रताप सरनाइक, शिवसेना में सब ठीक तो है

महाराष्ट्र में एकनाथ शिंदे की अगुवाई वाली शिवसेना से विधायक और मंत्री प्रताप सरनाईक एक बार फिर सुर्खियों में आ गए हैं। सरनाईक ने चौंकाते हुए कहा है कि ठाकरे ब्रांड खत्म नहीं होगा। इससे पहले सरनाईक मराठी मोर्चा में शामिल हुए थे। तब उन्होंने कहा था कि वे मराठी पहले हैं।

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

मुंबईः महाराष्ट्र में स्थानीय निकाय चुनावों से पहले जहां एक तरफ भाषा विवाद छाया हुआ है तो वहीं दूसरी तरफ राज ठाकरे और उद्धव ठाकरे के एक मंच पर आने के बाद चर्चा छिड़ी है कि दोनों भाई चुनावी राजनीतिक में हाथ मिलाएंगे। ऐसा होने पर महाराष्ट्र में समीकरण गड़बड़ाने की संभावना व्यक्त की जा रही है। इस सब के बीच महाराष्ट्र सरकार में मंत्री और शिंदे की अगुवाई वाली शिवेना के नेता प्रताप सरनाईक का एक बयान सुर्खियों में आ गया है। उन्होंने धाराशिव (उस्मानाबाद) के दौरे पर कहा कि मुंबई में ठाकरे ब्रांड खत्म नहीं होगा। सरनाईक धाराशिव जिले के संरक्षक मंत्री हैं। महाराष्ट्र के लोकल बॉडी चुनावों से पहले शिवसेना के विवाद पर आएगा अंतिम फैसला, सुप्रीम कोर्ट ने तय की सुनवाई सरनाईक का चौंकाने वाला बयानधाराशिव जिले में सरनाईक ने कहा कि ठाकरे का मतलब केवल शिवसेना (ठाकरे गुट) के प्रमुख उद्धव ठाकरे नहीं हैं, बल्कि इसमें मनसे प्रमुख राज ठाकरे और पूरा ठाकरे परिवार शामिल है। महाराष्ट्र के परिवहन मंत्री प्रताप सरनाईक रविवार को पौधारोपण अभियान के सिलसिले में धाराशिव पहुंचे थे। उन्होंने वहां पत्रकारों से बात करते हुए उन्होंने कहा कि ठाकरे ब्रांड अब भी कायम है। सरनाईक का बयान ऐसे वक्त पर आया है जब पूरे महाराष्ट्र में राज ठाकरे और उद्धव ठाकरे चर्चा का विषय बने हुए हैं। चुनाव आयोग एक 'पत्थर' है, सिंदूर...सामना के इंटरव्यू में शिवसेना के धनुष-बाण पर उद्धव ठाकरे का बड़ा बयानछिन गई थी पार्टी-सिंबलजब उपमुख्यमंत्री शिंदे के साथ शिवसेना से एक बड़ा गुट अलग हुआ, तब से ही यह चर्चा शुरू हो गई थी कि ठाकरे ब्रांड खत्म हो गया है। शिंदे को ही शिवसेना का नाम और धनुष-बाण का चुनाव चिह्न मिल गया. इसके कारण उद्धव ठाकरे के गुट को शिवसेना (उद्धव बालासाहब ठाकरे) नाम से पार्टी बनानी पड़ी थी। बाद में चुनाव आयोग ने पार्टी को मशाल चुनाव चिन्ह आवंटित किया था। शिवसेना के चुनाव धनुष और बाण को लेकर उद्धव ठाकरे सुप्रीम कोर्ट में हैं। वे चाहते हैं कि शिंदे गुट को सिंबल का इस्तेमाल करने से रोक जाए।

शानदार लुक, लंदन, न्यू यॉर्क जैसा फील

नवी मुंबई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा जल्द ही खुलने वाला है। इसके खुलने की तारीख फिलहाल 30 सितंबर रखी गई है। कहा जा रहा है कि नवी मुंबई एयरपोर्ट का लगभग 90 फीसदी काम पूरा हो गया है। एयरपोर्ट कुछ ही दिनों में उड़ान भरने को तैयार हो जाएगा।

मुंबई महानगर क्षेत्र के लिए एक अच्छी खबर है ! नया नवी मुंबई हवाई अड्डा अब 30 सितंबर को खुलने वाला है। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने यह तारीख बताई है। शुरूआत में, हवाई अड्डा केवल 12 घंटे के लिए, सुबह 8 बजे से रात 8 बजे तक ही खुला रहेगा। मतलब, अभी पूरा दिन उड़ानें नहीं होंगी। अगले साल की शुरूआत में अंतरराष्ट्रीय उड़ानें भी शुरू हो जाएंगी। तब हवाई अड्डा 24 घंटे खुला रहेगा। ?पहले चरण में, नवी मुंबई हवाई अड्डे पर एक रनवे और एक टर्मिनल होगा। इससे हर साल 2 करोड़ यात्री सफर कर सकेंगे। अभी मुंबई हवाई अड्डा बहुत व्यस्त है। वहां एक ही रनवे से हर साल लगभग 5.5 करोड़ यात्री आते-जाते हैं। नया हवाई अड्डा खुलने के बाद, टटफ में रहने वाले लोगों को दो हवाई अड्डों का विकल्प मिलेगा। वे अपनी पसंद के अनुसार किसी भी हवाई अड्डे से टिकट बुक कर सकेंगे। इससे यात्रियों को काफी सुविधा होगी। मुख्यमंत्री फडणवीस ने कहा है कि नवी मुंबई हवाई अड्डा 30 सितंबर को खुलेगा। इससे मुंबई और आसपास के इलाकों में हवाई यात्रा और आसान हो जाएगी। शुरूआत में यहां से हर दिन 60 उड़ानें होंगी। फिर छह महीने में यह संख्या बढ़कर 300 तक पहुंच जाएगी।मुंबई टर्मिनल को 2029-30 तक तोड़ा जाएगा। यह काम ठटकअ के दूसरे टर्मिनल के बनने के बाद होगा।

कृषि मंत्री के मोबाइल 'गेम' विवाद के बाद मारपीट पर अजित पवार सख्त, एनसीपी युवा शाखा प्रमुख से मांगा इस्तीफा

महाराष्ट्र में कृषि मंत्री माणिकराव कोकाटे के वीडियो प्रकरण के बाद एनसीपी कार्यकताओं द्वारा मारपीट किए जाने पर कड़ा संज्ञान लिया है। इस घटना का वीडियो वायरल होने के बाद अजित पवार ने पार्टी की युवा ईकाई के प्रमुख पर गाज गिरा दी है। पवार ने उनसे इस्तीफा मांग लिया है।

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

मुंबईः महाराष्ट्र में कृषि मंत्री माणिकराव कोकाटे के विधानसभा के अंदर मोबाइल पर रमी खेलने के मामले पर सियासत जारी है लेकिन इस बीच अजित पवार ने एनसीपी के युवा विंग चीफ सूरज चव्हाण पर गाज गिरा दी है। अजित पवार ने चव्हाण से तुरंत इस्तीफा देने को कहा है। अजित पवार ने यह फैसला इसलिए लिया है कि जब रविवार को छावा संगठन कृषि राज्य मंत्री का इस्तीफा मांगने पहुंचे तो वहां पार्टी के युवा कार्यकाताओं ने उनकी पिटाई कर दी थी। इसका वीडियो वायरल हुए था। इसके बाद शरद पवार गुट की नेता रोहिणी खडसे ने अजित पवार को निशाने पर लिया था। अजित पवार ने राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के कार्यकताओं द्वारा छावा संगठन के कार्यकताओं की पिटाई को गंभीरता से लिया है। उन्होंने एनसीपी की युवा शाखा के प्रमुख सूरज चव्हाण से अपने पद से इस्तीफा देने को कहा है। पवार ने एक बयान में कहा है कि यह सख्त फैसला इसलिए लिया गया है क्योंकि उनका व्यवहार पार्टी के मूल्यों के खिलाफ है और इसे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। राज्य में छावा संगठन ने सोमवार को प्रदर्शन किया। जालना में एनसीपी के कार्यालय को फूंकने की कोशिश की।अजित पवार के नेतृत्व वाली राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के कार्यकताओं ने रविवार को छावा संगठन के कार्यकताओं की पिटाई कर दी, क्योंकि वे महाराष्ट्र इकाई के अध्यक्ष सुनील तटकरे से लातूर में संवाददाता सम्मेलन के दौरान भिड़ गए और उनके सामने ताश के पत्ते फेंके। हाल ही में संपन्न राज्य विधानमंडल के मानसून सत्र के दौरान कृषि मंत्री माणिकराव कोकाटे को अपने मोबाइल फोन पर कथित तौर पर रम्मी खेलते हुए दिखाने वाला एक वीडियो वायरल हुआ था जिसके बाद छावा संगठन के कार्यकर्ता मंत्री के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे थे। (शरदचंद्र पवार) विधायक रोहित पवार द्वारा कोकाटे का वीडियो क्लिप साझा करने के बाद कोकाटे ने स्पष्ट किया कि वह केवल एक डाउनलोड किए गए गेम को स्किप कर रहे थे, जो विधान परिषद में उनके मोबाइल फोन की स्क्रीन पर दिखायी दे रहा था। टेलीविजन चैनलों पर छावा संगठन के नेता विजय घाटगे को तटकरे से भिड़ते और कोकाटे के इस्तीफे की मांग करते हुए उनकी मेज पर ताश के पत्तों की गड्डी फेंकते हुए दिखाया गया। कुछ देर बाद राकांपा कार्यकताओं ने घाटगे और अन्य लोगों को लात-घूंसों से पीटा, जिसके बाद पुलिस ने हस्तक्षेप करके उन्हें अलग किया।

मनसे की धमकी से डरे गुजरात के बीजेपी विधायक

गुजराती से मराठी में किया ऑफिस का बोर्ड

मुंबई में मराठी नहीं बोलने पर मनसे के कार्यकताओं की गुंडागर्दी जारी है। मुंबई लोकल ट्रेन के बाद घाटकोपर में भी भाषा विवाद सामने आया है। इस बीच मनसे की धमकी से डर बीजेपी विधायक के बोर्ड बदलने का मामला भी सामने आया है। विधायक ने गुजराती में बोर्ड लगाया हुआ था।

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

मुंबई/अहमदाबादः महाराष्ट्र में छिड़े भाषा विवाद के बीच राज ठाकरे की अगुवाई वाली मनसे का खौफ सामने आया है। मीरा रोड, पालघर, मुंबई लोकल ट्रेन, विक्रोली और घाटकोपर में भाषा विवाद सामने आने के बाद गुजराती बोर्ड को मराठी में करने का मामला सामने आया है। गुजरात बीजेपी में बीजेपी के विधायक वीरेंद्र बहादुर सिंह जाडेजा को मनसे के कार्यकताओं ने धमकी दी थी कि वे अपने ऑफिस के बोर्ड मराठी में कर लें। बीजेपी विधायक ने मुंबई स्थित अपने दफ्तर के ऑफिस का बोर्ड अब गुजराती भाषा मराठी में कर लिया है। वीरेंद्र बहादुर सिंह गुजरात के कच्छ जिले की रापर विधानसभा से विधायक हैं।हिंदी भाषियों पर हमलों के लिए बढ़ सकती हैं राज ठाकरे की मुश्किलें, पुलिस कंप्लेन के बाद सुप्रीम कोर्ट पहुंचा मामलागुजराती में था पूरा बोर्डमुंबई में हिंदी-मराठी भाषा विवाद के बीच मनसे कार्यकताओं ने जब नवी मुंबई में गुजराती भाषा में बोर्ड देखा था तो उन्होंने बोर्ड को मराठी में कर लेने की चेतावनी दी थी। गुजरात बीजेपी विधायक ने सीवुड्स के सेक्टर 42 में जनसंपर्क कार्यालय खोला हुआ है। सीवुड्स में मनसे की चेतावनी के कुछ ही घंटों बाद गुजराती साइनबोर्ड को मराठी में बदल दिया गया। बोर्ड को बदलने पर विधायक की तरफ से कोई प्रतिक्रिया सामने नहीं है।बीजेपी टछअ के बेटे का सेना के टैंक पर वीडियो शूट...इंस्टाग्राम की रील में किया पोस्ट, मंजूरी पर उठे सवाल क्षत्रिय समाज के अग्रणी हैं विधायककच्छ के रापर से विधायक वीरेंद्र बहादुर सिंह जाडेजा कच्छ राजपूत क्षत्रिय सभा के भी प्रमुख हैं। मुंबई समेत पूरे महाराष्ट्र में मनसे के कार्यकताओं द्वारा गैर मराठी भाषाओं को टारगेट किए जाने की घटनाएं सामने आई हैं। मीरा भाईंदर की सभा में राज ठाकरे ने ऐलान किया था कि अगर राज्य में जबरदस्ती हिंदी थोपी गई तो वह स्कूल बंद करा देंगे, हालांकि भाषा के नाम पर लोगों में नफरत फैलाने के लिए राज ठाकरे के खिलाफ महाराष्ट्र पुलिस से शिकायत हुई है

नो हनी, नो ट्रैप...महाराष्ट्र फडणवीस के जवाब पर संजय राउत का 'फोटो बम', सीबीआई जांच की मांग

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

महाराष्ट्र में मानसून सत्र के दौरान विपक्ष ने हनीट्रैप स्कैंडल का दावा किया था, लेकिन मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने विपक्ष के दोनों को यह कहते हुए खारिज कर दिया था कि महाराष्ट्र में ऐसी कोई घटना नहीं हुई। अब उद्धव ठाकरे गुट के नेता ने एक तस्वीर पोस्ट करके सीबीआई से जांच करवाने की मांग रखी है।

मुंबईः महाराष्ट्र में उद्धव ठाकरे गुट के नेता संजय राउत ने हनीट्रैप कांड को लेकर सीधे मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को निशाने पर लिया है। राउत ने एक्स पर महायुति सरकार के एक मंत्री की तस्वीर को पोस्ट करके हनीट्रैप स्कैंडल का दावा किया है। राउत ने आरोप लगाया है कि मुख्यमंत्री ने सदन में गुमराह किया। वे चुनौती देते हैं कि मुख्यमंत्री सीबीआई से इस तस्वीर की जांच करवा लें। राउत ने जो तस्वीर पोस्ट की है। उसमें फडणवीस सरकार में मंत्री गिरीज महाजन को प्रफुल लोढ़ा मिठाई खिलाते दिख रहे हैं। प्रफुल लोढ़ा को हनीट्रैप के मामले में ही अरेस्ट किया गया है। राउत ने लोढ़ा की गिरफ्तारी के बाद यह तस्वीर साझा की है। इसके साथ मुख्यमंत्री से सीबीआई जांच की मांग की है।

संजय राउत का बड़ा दावा

संजय राउत ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर जो तस्वीर पोस्ट की हैं। उसमें एक शख्स वर्तमान सरकार में कद्दावर मंत्री गिरीज महाजन को मिठाई खिला रहा है। राउत ने लिखा है कि मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने सदन को गुमराह किया। उन्होंने यह कहा कि कि महाराष्ट्र में कोई हनीट्रैप नहीं हुआ। सच सामने आकर रहेगा। राउत ने दावा किया है कि हनीट्रैप में चार मंत्री और कई ऑफिसर्स फंसे थे। राउत ने यह भी लिखा है कि उस वक्त पर चार युवा सांसद शिवसेना छोड़कर गए थे। उन्होंने ऐसा इसी हनीट्रैप के चलते किया था। राउत ने कहा है कि इस एक फोटो की सीबीआई जांच होने दीजिए। राउत ने जलगांव पहुंचाया केससंजय राउत ने अपनी एक्स पोस्ट से हनीट्रैप केस को सीधे जलगांव के जामनेर पहुंचा दिया है। गौतलब हो कि बीजेपी में शामिल हुए प्रफुल लोढ़ा के खिलाफ हनी ट्रैप का मामला दर्ज किया गया है। मुंबई में मामला दर्ज किया गया है और उन्हें गिरफ्तार भी किया गया है। जलगांव जिले के जामनेर निवासी प्रफुल लोढ़ा के खिलाफ मुंबई में दो मामले दर्ज किए गए हैं। एक मामला पॉक्सो एक्ट के तहत और दूसरा बलात्कार और हनी ट्रैप का है। लोढ़ा को मंत्री गिरीश महाजन का करीबी माना जाता रहा है। हालांकि इन आरोपों पर तस्वीर में दिख रहे मंत्री गिरीश महाजन की प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है।पटोल और वडेट्टीवार भी उठा चुके केसशिवसेना यूबीटी नेता संजय राउत से पहले कांग्रेस के नाना पटोले ने विधानसभा परिसर में एक पेन ड्राइव दिखाई थी और दावा किया था कि 72 से ज्यादा ऑफिसर हनीट्रैप में फंसे। पटोले ने कहा था कि अगर सरकार ने कार्रवाई नहीं की तो वह इस पब्लिक करेंगे। इसके बाद कांग्रेस के नेता विजय वडेट्टीवार ने यहां तक कहा दिया था कि हनीट्रैप के जरिए एमवीए सरकार गिराई गई थी।

विषयः बम विस्फोटों के बाद किए गए सुरक्षा में संवर्द्धन के कार्य और चल रही सुरक्षा पहलों का विवरण

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

हाल ही में माननीय उच्च न्यायालय के निर्णय और उसके बाद मीडिया द्वारा पूछे गए प्रश्नों के परिपेक्ष्य में पश्चिम रेलवे द्वारा बड़े बम विस्फोट घटनाओं के बाद किए गए सुरक्षा उपायों और पिछले कुछ वर्षों में सुरक्षा के बुनियादी ढांचे में उत्तरोत्तर वृद्धि के साथ-साथ भविष्य में आने वाली प्रमुख परियोजनाओं के संबंध मेंः

बम विस्फोटों के बाद सुरक्षा में वृद्धिः

प्रमुख बम विस्फोटों, विशेष रूप से 11 जुलाई 2006 को मुंबई उपनगरीय ट्रेन में हुए सिलसिलेवार विस्फोटों और उसके बाद के अन्य खतरों के बाद, भारतीय रेल ने आरपीएफ, जीआरपी, खुफिया एजेंसियों और स्थानीय प्रशासन के साथ मिलकर अपनी सुरक्षा रणनीति में व्यापक बदलाव किया है। इस विषय में उठाए गए कदमों में शामिल हैंः

प्रमुख स्टेशनों पर त्वरित प्रतिक्रिया दल (क्यूआरटी) का गठन।

बम डिटेक्शन एंड डिस्पोजल स्क्वाड (बीडीडीएस) की तैनाती।

संवेदनशील क्षेत्रों में आरपीएफ-जीआरपी की संयुक्त गश्त बढ़ाई गई।

राज्य और केंद्रीय एजेंसियों के साथ खुफिया समन्वय बढ़ाया गया।

पीक आवर से पहले एंटी सबोटीज जाँच पर विशेष ध्यान दिया गया।

उच्च जोखिम वाले स्टेशनों और ट्रेनों में बैगेज की आकस्मिक जाँच की गई।

पिछले कुछ वर्षों में किए गए प्रगतिशील उपायः

एकीकृत सुरक्षा प्रणाली (आईएसएस):

सीसीटीवी कवरेज, बैगेज स्कैनर और बम डिटेक्शन उपकरणों के माध्यम से निगरानी को मजबूत किया गया।

मुंबई उपनगरीय स्टेशनों पर 3048 सीसीटीवी लगाए गए।

146 उपनगरीय लोकल ट्रेनों में कुल 451 महिला डिब्बों में 305 सीसीटीवी लगाए गए।

प्रमुख स्टेशनों पर हाई-डेफिनिशन आईपी-आधारित सीसीटीवी लगाए गए।

स्टेशन नियंत्रण कक्षों के साथ रियल टाइम वीडियो फीड को एकीकृत किया गया और प्रशिक्षित आरपीएफ कर्मियों द्वारा निगरानी की गई।

सामान की स्कैनिंग और स्क्रीनिंगः

मुंबई मंडल के चुनिंदा संवेदनशील स्टेशनों पर 5 एक्स-रे बैगेज स्कैनर लगाए गए।

प्रवेश द्वारों पर डोर फ्रेम मेटल डिटेक्टर (डीएफएमडी) और हैंड-हेल्ड मेटल डिटेक्टर (एचएचएमडी) का उपयोग किया गया।

मुंबई उपनगरीय क्षेत्र के महत्वपूर्ण स्टेशनों पर कुल 217 एचएचएमडी उपलब्ध कराए गए।

मुंबई उपनगरीय क्षेत्र के चुनिंदा संवेदनशील स्टेशनों पर 16 डीएफएमडी लगाए गए।

महत्वपूर्ण स्टेशनों पर बैगेज स्कैनर और डीएफएमडी के माध्यम से सामान की रैंडम जाँच की गई।

फेशियल रिकग्निशन सिस्टम (एफआरएस):

मुंबई उपनगरीय स्टेशनों पर वांछित/आपराधिक तत्वों की पहचान के लिए 470 सीसीटीवी को एकीकृत किया गया।

श्वान दस्तों की तैनातीः

उपनगरीय क्षेत्र के प्रमुख स्टेशनों पर सूंघने और बम का पता लगाने के लिए नियमित रूप से खोजी कुत्तों के 07 दस्ते तैनात किए गए।

विस्फोटक वस्तुओं की ढुलाई को रोकने/पता लगाने के लिए के-9 डॉग के माध्यम से महत्वपूर्ण स्टेशनों और महत्वपूर्ण ट्रेनों के डिब्बों की नियमित जांच की गई।

ट्रेन एस्कॉर्टिंगः

आरपीएफ के एस्कॉर्ट दल प्रतिदिन 64 से अधिक ट्रेनों में तैनात किए जाते हैं, जिनका विशेष ध्यान संवेदनशील सेक्शन पर होता है।

महिला यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए मुंबई मंडल के अंतर्गत 8 ट्रेनों में ₹मेरी सहेली₹ टीमें तैनात की गई हैं। औसतन, प्रतिदिन लगभग 144 महिला यात्रियों को सहायता प्रदान की जा रही है।

ड्रोन से निगरानीः

मुंबई उपनगरीय क्षेत्र में हवाई निगरानी के लिए चुनिंदा यार्डों और स्टेशनों पर ड्रोन से निगरानी की गई।

प्रमुख परियोजनाएँ / हालिया उन्नयनः

सीसीटीवी कवरेज का विस्तारः

वीएसएस चरण-क के तहत स्थापित किए गए 652 गैर-एसटीक्यूसी कैमरों को मुंबई उपनगरीय क्षेत्र के 19 स्टेशनों से स्थानांतरित करने का प्रस्ताव है।

वीएसएस कार्यों के संशोधित सर्वेक्षण में अतिरिक्त 407 कैमरे लगाने का प्रस्ताव है।

केंद्रीय कमांड केंद्रों (क्षेत्रीय/मंडल स्तर पर) से रियल टाइम निगरानी।

दुलहन को पसंद नहीं आया तो ठाणे के शोरूम में मंगेतर ने चाकू से फाड़ डाला लहंगा

कल्याण में एक चौंकाने वाली घटना सामने आई, जहां एक युवक अपनी मंगेतर के लहंगे के पैसे वापस न मिलने पर आपा खो बैठा। गुस्से में उसने दुकान में घुसकर चाकू से लहंगे को फाड़ डाला और कर्मचारियों को धमकाया। पुलिस ने उसे गिरफ्तार तो कर लिया, लेकिन उसे तुरंत जमानत मिल गई।

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

मुंबई : प्यार में एक गुस्साए युवा आदमी किस हद तक जा सकता है, इसका अंदाजा लगाना मुश्किल है। कल्याण में एक ऐसा मामला सामने आया है। एक आदमी अपनी मंगेतर के लिए खरीदे गए लहंगे के पैसे वापस न मिलने से नाराज था। यह लहंगा 32,300 रुपये का था। लड़की शादी के लिए लहंगा खरीदना चाहती थी, लेकिन बाद में उसे वापस करना चाहती थी। जब दुकानदार ने पैसे वापस नहीं किए, तो वह आदमी चाकू लेकर दुकान में घुस गया। उसने गुस्से में लहंगे को फाड़कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया।आरोप है कि उस आदमी ने शोरूम के कर्मचारियों को भी धमकाया। यह पूरी घटना दुकान में लगे उउळश कैमरों में कैद हो गई। शोरूम के मैनेजर ने पुलिस बुलाई। हालांकि तब तक लड़का शोरूम से जा चुका था। सीसीटीवी फुटेज से उसकी पहचान की गई।ठाणे के शोरूम में घुसा, चाकू से फाड़ डाला लहंगा, वजह जानकर रह जाएंगे हैरान, देखें वीडियोलड़की ने लहंगा खरीदा थामेघना माखिजा नाम की लड़की ने 17 जून को यह लहंगा खरीदा था। उसी शाम उसने दुकान पर फोन किया और कहा कि उसे लहंगा पसंद नहीं आया। वह उसे वापस करना चाहती है।दुकानवाले ने कहा रुपये नहीं होंगे वापसदुकानवालों ने उसे बताया कि पैसे वापस नहीं मिलेंगे। लेकिन वह क्रेडिट नोट ले सकती है। क्रेडिट नोट का इस्तेमाल करके वह दो महीने के अंदर दुकान से कुछ और खरीद सकती है। एक महीने बाद, शनिवार को वह लड़की दोबारा दुकान पर गई।मंगेतर दुकान में आयाएक सेल्समैन ने उसे बताया कि अभी उनके यहां स्टॉक क्लीयरेंस सेल चल रही है। उसने लड़की से अगले महीने आने को कहा। इसके थोड़ी देर बाद, उसका मंगेतर सुमित सयानी गुस्से में शोरूम में घुस गया। उसने पैसे वापस करने की मांग की। नक्षत्र शोरूम के मैनेजर ने शिकायत दर्ज कराई है।

मुंबई में भारी बारिश, झीलें लबालब, सड़कों पर पानी ही पानी, मौसम विज्ञान विभाग ने जारी किया अलर्ट

भारत मौसम विज्ञान विभाग ने अगले 48 घंटों में मुंबई में भारी बारिश की संभावना जताई है, साथ ही तेज हवाएं और गरज के साथ बारिश की चेतावनी भी दी है। पिछले दिनों हुई भारी बारिश के कारण पहले से ही कई इलाकों में पानी भर गया है और झीलों का जल स्तर बढ़ गया है।

पश्चिम रेलवे

आईपी आधारित वीडियो सर्विलांस सिस्टम

मुख्य वर्कशॉप प्रबंधक, कैरिएज मरम्मत वर्कशॉप, पश्चिम रेलवे, एन. एम. जोशी मार्ग, लोअर परेल, मुंबई – 400 013 द्वारा निम्नलिखित निविदा आमंत्रित की जाती है. **अ.क्र. : 1. ई-निविदा सूचना क्र. : डब्ल्यूआर-पीएल-एमई-ईएसटी-655244 (आईसीएफ), दिनांक : 18.07.2025. स्थान के साथ कार्य का नाम** : 03 वर्षीय वारंटी के साथ पश्चिम रेलवे में आईसीएफ कोचेस में आईपी आधारित वीडियो सर्विलांस सिस्टम (वीएसएस) की आपूर्ति, अधिष्ठापन, परीक्षण और क्रियान्वयन. **अनुमानित लागत** : रु. 60,90,95,831.44. **ईएमडी** : रु. 31,95,500/-. **अ.क्र. : 2. ई-निविदा सूचना क्र. : डब्ल्यूआर-पीएल-एमई-ईएसटी-656049ए (एलएचबी), दिनांक : 18.07.2025. स्थान के साथ कार्य का नाम** : 03 वर्षो की वारंटी के साथ पश्चिम रेलवे में एलएचबी कोचेस में आईपी आधारित वीडियो सर्विलांस सिस्टम (वीएसएस) की आपूर्ति, अधिष्ठापन, परीक्षण और क्रियान्वयन. **अनुमानित लागत** : रु. 165,43,41,497.60. **ईएमडी** : रु. 84,21,700/-. **दोनों निविदाएं जमा करने की तिथि एवं समय** : 19.08.2025 को 15.00 बजे तक, **दोनों निविदाएं खुलने की तिथि एवं समय** : 19.08.2025 को 15.30 बजे. अधिक जानकारी के लिए कृपया हमारी वेबसाइट **www.ireps.gov.in** का अवलोकन करें. 0417

Like us on : facebook.com/WesternRly

पश्चिम रेलवे

पैकेज एसी प्लांट्स का प्रतिस्थापन

वरि. डीईई/पी/बीसीटी द्वारा निविदा क्र. : ईएल-4-337-डब्ल्यूए-30, दि. 17.07.2025 आमंत्रित की जाती है. **कार्य एवं स्थान** : मुंबई मंडल – आयु सह स्थिति आधार पर पैकेज एसी प्लांट्स का प्रतिस्थापन. **कार्य की अनुमानित लागत** : रु. 1,12,03,634/-, **ईएमडी** : रु. 2,06,000/-, **जमा करने की तिथि एवं समय** : 22.08.2025, 15.00 बजे तक, **खुलने की तिथि एवं समय** : 22.08.2025 को 15.30 बजे. अधिक जानकारी के लिए कृपया हमारी वेबसाइट **www.ireps.gov.in** का अवलोकन करें. 0415

Like us on : facebook.com/WesternRly

पश्चिम रेलवे

आईपी आधारित वीडियो सर्विलांस सिस्टम

मुख्य वर्कशॉप प्रबंधक ईएमयू वर्कशॉप, महालक्ष्मी, मुंबई – 400 013 द्वारा **ई-निविदा सूचना क्र. : ईएल90/एमएक्स/2025-26/05, दि. 17.07.2025** आमंत्रित की जाती है. **कार्य का नाम** : आरडीएसओ विनिर्देशन क्र. आरडीएसओ/एसपीएन/टीसी/106/2025, वर्जन. 3.1 अथवा नवीनतम के अनुसार ईएमयू/एमईएमयू/डीईएमयू कोचेस में आईपी आधारित वीडियो सर्विलांस सिस्टम (वीएसएस) की आपूर्ति, अधिष्ठापन, परीक्षण तथा क्रियान्वयन. **कार्य की अनुमानित लागत** : रु. 97,33,18,268.20. **ईएमडी** : रु. 50,16,600/-. **निविदा जमा करने की तिथि एवं समय तथा निविदा का खुलना** : निविदा 18.08.2025 को 15.00 बजे तक जमा (इलेक्ट्रॉनिक तरीके से) करनी होगी. अधिक जानकारी के लिए कृपया हमारी वेबसाइट **www.ireps.gov.in** का अवलोकन करें. 0416

Like us on : facebook.com/WesternRly

उत्कृष्ट विद्यार्थी सम्मान समारोह एवं महाराणा प्रताप खंडकाव्य पुस्तक का विमोचन

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

ठाणे ,क्षत्रिय समाज चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी उत्कृष्ट विद्यार्थी सम्मान समारोह तथा महाराणा प्रताप खंडकाव्य पुस्तक का विमोचन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस गरिमामय अवसर पर सैकड़ों विद्यार्थी, पालकगण एवं विशिष्ट अतिथिगण उपस्थित रहे ।कार्यक्रम का शुभारंभ मुंबई विश्वविद्यालय के लॉ फैकल्टी डीन डॉ. अनिल कुमार सिंह के करकमलों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ ।इस अवसर पर उद्योगपति रमेश सिंह, रामबक्स सिंह, अनिल सिंह, बलवंत सिंह, डॉ. सी. पी. सिंह, संस्था के मार्गदर्शक प्रभाकर सिंह और अभिराम सिंह मंच पर विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान 100 से अधिक मेधावी विद्यार्थियों को बैग, मेडल, ट्राफी,छतरी एवं प्रशस्ति पत्र देकर कर सम्मानित किया गया, जिससे छात्रों का मनोबल और आत्मविश्वास दोनों बढ़ाने का प्रयास किया गया। संस्थापक एडवोकेट विनय कुमार सिंह ने बच्चों को प्रेरित करते हुए कहा कि आप सभी को मूल विषयों की गहरी समझ बनाते हुए प्रतियोगी परीक्षाओं की दिशा में एकाग्र होकर तैयारी करनी चाहिए। यही सफलता की असली नींव है। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में शैलेश सिंह, रणधीर सिंह, अनूप सिंह, मृत्युंजय शाही और अनिल सिंह का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम में सुधीर सिंह, नरेंद्र भाई, सुनील सिंह, राजेश सिंह, राजनाथ सिंह, संजय सिंह, प्रदीप सिंह, प्रमोद शाही, समरजीत सिंह और रंजीत सिंह का सहयोग रहा। संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष विजय प्रताप सिंह ने सभी गणमान्य अतिथियों, सहयोगियों और समिति सदस्यों का आभार प्रकट करते हुए, समिति का विस्तृत परिचय मंच से साझा किया। ठाणे महिला अध्यक्षा श्रीमती मनीषा सिंह ने पूरे कार्यक्रम का संचालन अत्यंत सशक्त और प्रभावशाली ढंग से किया। कार्यक्रम में एन. बी. सिंह 'नादान' द्वारा लिखित महाराणा प्रताप खंडकाव्य पुस्तक का विमोचन हुआ। अंतिम चरण में अमर सिंह रघुवंशी द्वारा प्रस्तुत महाराणा प्रताप पर आधारित गीत ने पूरे वातावरण को वीररस और राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत कर दिया।

एमएमआरडीए के माध्यम से शुरू सड़क विकास कार्य दिसंबर तक पूरे करें : प्रताप सरनाईक

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

मुंबई ,ठाणे मनपा क्षेत्र के सेक्टर क्रमांक 4, 5 और 6 में स्वीकृत विकास योजना के अनुसार नियोजित सड़कों का विकास मुंबई महानगर क्षेत्र विकास प्राधिकरण (एमएमआरडीए) द्वारा किया जा रहा है। घोड़बंदर रोड पर यातायात की भीड़भाड़ से बचने के लिए, सड़क निर्माण कार्य दिसंबर तक पूरा किया जाना चाहिए। ये निर्देश परिवहन मंत्री श्री प्रताप सरनाईक ने दिए हैं। मुंबई महानगर क्षेत्र विकास प्राधिकरण के कार्यालय में आयोजित एक बैठक में एमएमआरडीए के माध्यम से ठाणे मनपा क्षेत्र में क्रियान्वित की जा रही विभिन्न योजनाओं की प्रगति की समीक्षा करते हुए बोलते हुए इस आशय का निर्देश दिए। इस अवसर पर ठाणे मनपा आयुक्त सौरभ राव, मुंबई महानगर क्षेत्र विकास प्राधिकरण के अतिरिक्त आयुक्त अश्विन कुमार मुदगल और विक्रम कुमार सहित इंजीनियर और अन्य अधिकारी उपस्थित थे ।मंत्री सरनाईक ने कहा कि इस परियोजना के तहत ठाणे मनपा क्षेत्र में घोड़बंदर रोड पर यातायात की भीड़ को देखते हुए मुख्य सड़क के दोनों ओर डीपी सड़कों का विकास किया जाएगा। मुख्य सड़क के दोनों ओर की सर्विस रोड को 31 दिसंबर तक मुख्य सड़क से जोड़ा जाना चाहिए। साथ ही, मेट्रो स्टेशन की सीढ़ियाँ सड़क के बीच में न बनाकर सड़क के दोनों ओर रखी जानी चाहिए। मंत्री सरनाईक ने इस अवसर पर संबंधित अधिकारियों को ऐसे निर्देश दिए। इस परियोजना के कार्यान्वयन से घोड़बंदर रोड पर यातायात की भीड़ काफी हद तक कम हो जाएगी। साथ ही, क्षेत्र के नागरिकों को वैकल्पिक सड़कें उपलब्ध होंगी। इसी तरह, 20 में से 5 सड़कों का एक अलग सर्वेक्षण चल रहा है, और शेष 10 सड़कों के नए विकास कार्य को जल्द ही अंतिम रूप दिया जाएगा। मंत्री प्रताप सरनाईक ने जोर देकर कहा कि ठाणे शहर में यातायात की समस्या को हल करने के लिए एमएमआरडीए और ठाणे मनपा प्रशासन को एक-दूसरे का सहयोग करना चाहिए और परियोजनाओं को तेज गति से पूरा करना चाहिए।

फास्ट ट्रैक

1 किलो 209 ग्राम मादक पदार्थ एमडी पावडर के साथ एक गिरफ्तार

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

ठाणे , पुलिस आयुक्तालय क्षेत्र में नशीले पदार्थों की खपत और बिक्री में भारी वृद्धि के कारण युवा पीढ़ी इन नशीले पदार्थों की आदी होती जा रही है। इन नशीले पदार्थों की खपत और बिक्री पर अंकुश लगाने और युवा पीढ़ी को नशे से मुक्त कराने के लिए, ठाणे पुलिस आयुक्त आशुतोष डुंबरे ने सभी विभागों को कार्रवाई करने का आदेश दिया था। इसी पृष्ठभूमि में, ठाणे क्राइम ब्रांच यूनिट 1 की एक टीम ने 1 किलो 209 ग्राम एमडी पावडर के साथ एक तस्कर को पकड़ा है। ठाणे क्राइम ब्रांच को एक गोपनीय मुखबिर के माध्यम से सूचना मिली थी कि एक व्यक्ति मुंब्रा बाईपास रोड पर एमडी लेने जा रहा है। इस सूचना के आधार पर, ठाणे क्राइम ब्रांच पुलिस ने मुंब्रा बाईपास के पास जाल बिछाया। इस समय, पुलिस को एक मारुति कार संदिग्ध रूप से चलती हुई दिखाई दी। जैसे ही पुलिस को शक हुआ, उन्होंने कार और चालक मोहनलाल गुणेशजी जोशी उर्फ शर्मा को अपनी गिरफ्त में ले लिया और उसकी तलाशी ली। तलाशी के दौरान पुलिस को 1 करोड़ 69 हजार 26 रुपये कीमत का 1 किलो 209 ग्राम एमडी मिला। पुलिस ने ये सारा सामान जब्त कर तस्कर को गिरफ्तार कर लिया है। मुंब्रा पुलिस स्टेशन में उसके खिलाफ एन.डी.पी.एस. एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया है। तस्कर इतनी बड़ी मात्रा में एमडी कहां से लाया और किसे बेचने के लिए लाया था, इसकी पुलिस जांच कर रही है।

राज्य में 22 जुलाई से 22 अगस्त तक मोतियाबिंद मुक्त महाराष्ट्र अभियान शुरू

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

ठाणे , महाराष्ट्र सरकार ने 22 जुलाई से 22 अगस्त, 2025 तक पूरे राज्य में मोतियाबिंद मुक्त महाराष्ट्र नामक एक विशेष अभियान का आयोजन किया है। इसके लिए स्वास्थ्य विभाग की ओर से नागरिकों से सरकारी अस्पताल में जाकर लाभ उठाने का आवाहन किया है। इस अभियान के दौरान, राज्य में सरकारी, गैर-सरकारी संगठनों और निजी पेशेवरों के माध्यम से एक लाख मोतियाबिंद सर्जरी करने का लक्ष्य रखा गया है। इसी उद्देश्य से, जिले के विभिन्न स्थानों पर सरकारी अस्पतालों में मोतियाबिंद सर्वेक्षण शिविर और सर्जरी शिविर आयोजित किए गए हैं। हालांकि, जिला स्वास्थ्य विभाग ने नागरिकों से इस अभियान में भाग लेने और निकटतम सरकारी अस्पताल में जाकर इसका लाभ उठाने की अपील की है।

रामलीला समिति अध्यक्ष ने खुद की बाइक में लगाई आग

मिर्जापुर में नशे में धुत्त होकर परिवार से विवाद के बाद लगाई आग

मिर्जापुर, मिर्जापुर के मड़िहान थाना क्षेत्र के कलवारी बाजार में एक अजीब घटना सामने आई। कलवारी बाजार आदर्श रामलीला समिति के अध्यक्ष दिलीप केशरी ने नशे की हालत में अपनी बाइक को आग लगा दी। 45 वर्षीय केशरी नशे में धुत्त होकर घर पहुंचे। परिवार के साथ विवाद के बाद वह गुस्से में बाहर निकले। उन्होंने सड़क की पटरी पर खड़ी अपनी बाइक में माचिस की तीली से आग लगा दी। बाइक में लगी आग को देखकर बाजार में अफरा-तफरी मच गई। दुकानदार अपनी दुकानें छोड़कर बाहर आ गए और सड़क पर आवागमन रुक गया। कांवरियों की सुरक्षा में तैनात पीएससी के जवान मौके पर पहुंचे। उन्होंने बाल्टी से पानी डालकर आग को बुझाया। तब तक बाइक पूरी तरह जल चुकी थी। थाना प्रभारी प्रदीप सिंह के अनुसार, केशरी नशे के आदी हैं।

जीएम मोमिन वीमेंस कालेज अध्ययन केंद्र में दीक्षांत समारोह में सफल विद्यार्थी हुए सम्मानित

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

ठाणे , यशवंत राव चव्हाण महाराष्ट्र ओपन यूनिवर्सिटी नासिक के तत्वावधान में जारी केएमई सोसाइटीज जीएम मोमिन वीमेंस कालेज अध्ययन केंद्र में मई/जून 2024 में बीए और एमए उतत छात्रों को उनकी उपाधियाँ प्रदान कर उन्हें सम्मानित किया गया। यह दीक्षांत समारोह भिवंडी के रईस हाई स्कूल के उर्दू बसेरा हॉल में आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता केएमई सोसायटी के सचिव दानियाल काजी ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में डिग्री प्राप्त करने वाले छात्रों को बधाई दी और भविष्य में हर संभव सहयोग का आश्वासन दिया। डॉ.रशीद अशरफ खान सहायक प्रोफेसर वाईसीएमओयू नाशिक समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। विशेष अतिथियों में केएमई सोसायटी के उपाध्यक्ष एडवोकेट यासीन मोमिन,प्रिंसिपल जियाउर रहमान अंसारी,नूह खलील पटेल,नदीम तासे, इरफान बर्डी, इस्माइल बोबड़े,मुख्तिस मदू और केंद्र प्रभारी सफा आगा उपस्थित थीं। प्रिंसिपल जिया-उर-रहमान अंसारी ने अपने उद्घाटन भाषण में छात्रों को बधाई दी। उन्होंने डिस्टैंस एजुकेशन के उद्देश्यों और उपयोगिता का उल्लेख किया। छात्रों को वर्तमान युग की मांगों के साथ चलने की सलाह दी।अध्ययन केंद्र के समन्वयक अब्दुल अजीज अंसारी ने अध्ययन केंद्र की गतिविधियों का विस्तृत विवरण प्रस्तुतकिया।मुख्य अतिथि डॉ. रशीद अशरफ खान ने अध्ययन केंद्र के उत्कृष्ट प्रदर्शन की प्रशंसा की तथा कोआर्डिनेटर,शिक्षकों और डिग्री प्राप्त करने वाले छात्रों को बधाई दी।उन्होंने दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से सफल छात्रों को शैक्षणिक मानकों को बनाए रखने और अपने ज्ञान को बढ़ाने की सलाह दी।आप ने कहा कि यशवंत राव चौहान महाराष्ट्र ओपन यूनिवर्सिटी का पाठ्यक्रम और गुणवत्ता किसी भी पारंपरिक विश्वविद्यालय से कम नहीं है। समारोह में मई, जून 2023 में सफल बीए और एमए उत्तीर्ण छात्रों को भी डिग्रियां वितरित की गईं। इस अवसर पर अध्यन केंद्र के काउन्सिलर्स मुहम्मद रफी अंसारी, डॉ. कुतुबुद्दीन शाहिद, जाकिर हुसैन खान, डॉ.मतीउल्लाह खान, जफर आलम जामयी, डॉ.अबू तालिब अंसारी,एजाज हाशमी, डॉ.अबू साद एजाज एवं सोफिया मोमिन का अतिथियों द्वारा सत्कार किया गया।कार्यक्रम की शुरूआत मौलाना खालिद खान द्वारा पवित्र कुरान की तिलावत से हुई। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार प्रदर्शन सोफिया मोमिन ने किया। कार्यक्रम की सफलता में तहूर मोमिन, मूनिस अंसारी एवं आफरीन मोमिन का विशेष सहयोग शामिल रहा।

अंबरनाथ स्थित बुआपाड़ा के नागरिकों ने अनियमित जलापूर्ति को लेकर मजीप्रा कार्यालय पर दिया धरना

लोकाधिकार सामाजिक संस्था के उपाध्यक्ष अशोक शाह के नेतृत्व में महिलाओं ने किया मजीप्रा का घेराव।

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

अंबरनाथ.अंबरनाथ पश्चिम स्थित बुआपाड़ा और अन्य इलाकों में पानी की समस्या और मजीप्रा द्वारा अनियमित जलापुर्ति से त्रस्त नागरिकों ने सोमवार 21 जुलाई को अंबरनाथ पूर्व स्थित महाराष्ट्र जीवन प्राधिकरण कार्यालय पर धरना देकर अपना रोष व्यक्त किया। बुआपाड़ा के स्थानीय नागरिकों विशेषकर महिलाओं ने लोकाधिकार सामाजिक संस्था के उपाध्यक्ष अशोक शाह के नेतृत्व में मजीप्रा कार्यालय पर जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। लोगों का कहना था कि निरंतर हो रही अच्छी बारिश से जलाशय और बांध ओवरफ्लो हो रहे हैं और वहीं दूसरी ओर हम जैसे आम नागरिकों को अभी भी पीने के पानी के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। विगत कई महीनों से हम लोगों को अनियमित जलापूर्ति का सामना करना पड़ रहा है। गुस्साए नागरिकों ने मजीप्रा प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी करते हुए विरोध प्रदर्शन किया और कार्यालय में धरना दिया। लोकाधिकार सामाजिक संस्था के उपाध्यक्ष अशोक शाह के नेतृत्व में ज्ञापन के माध्यम से नागरिकों की बात रखते हुए कहा कि आने वाले 15 दिनों में पानी की समस्या हल नहीं हुई तो 8 अगस्त को महाराष्ट्र जीवन प्राधिकरण कार्यालय में बड़े पैमाने पर हण्डा मोर्चा निकाला जाएगा। मजीप्रा प्रशासन ने अपना पक्ष रखते हुए नागरिकों से कहा कि अनियमित जलापुर्ति के लिए विद्युत कटौती भी जिम्मेदार है और महावितरण इसके लिए दोषी है। नागरिकों की सुविधा के लिए सुदर्शन चौक क्षेत्र में एक नया बूस्टर पंप लगाया जाएगा।अनधिकृत नल कनेक्शन कांटे जाएँगे जिससे लोगों को जलापूर्ति की समस्या दूर करने में मदद मिलेगी।मजीप्रा प्रशासन द्वारा नागरिकों को संतोषजनक जवाब देने पर लोगों ने अपना आंदोलन और विरोध प्रदर्शन बंद कर दिया। सामाजिक कार्यकर्ता अशोक शाह,बबलू सिंह और भारी संख्या में उपस्थित महिलाओं ने 15 दिन में पानी की समस्या का समाधान न होने पर एक बड़े जन आंदोलन की धमकी भी दी।

कांग्रेस उत्तर भारतीय प्रकोष्ठ के अध्यक्ष का मुलुंड में भव्य सत्कार

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

मुंबई ,मुंबई कांग्रेस उत्तर भारतीय प्रकोष्ठ के नव नियुक्त अध्यक्ष एड. अवनीश तीर्थराज सिंह का भव्य सत्कार समारोह ग्रैंड सेंट्रल हॉल,मुलुंड में किया गया उन्होंने अपना उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि जो लोग कांग्रेस से दूर हो गए हैं पुनः संगठन से जोड़ने का प्रयास किया जाएगा। महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता राकेश शेट्टी, पूर्व नगर सेवक बी के तिवारी, रॉय मणि , वरिष्ठ कांग्रेस नेता डॉ बाबूलाल सिंह, डॉ. आर. आर. सिंह, प्रदुम्न यादव, वरिष्ठ समाज सेवी रमाशंकर तिवारी,संतोष विश्वकर्मा, अंजनी कुमार सिंह,कालिका सिंह, साहब दयाल सिंह,सुषमा मौर्य, सुक्खु गुप्ता,सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित रहे विशिष्ट अतिथि के रूप में हरीश वर्मा (अध्यक्ष महाराष्ट्र कूर्मि क्षत्रिय समाज), राजाराम पाल (अध्यक्ष पाल विकास मंच),लक्ष्मी नारायण चौरसिया (अध्यक्ष चौरसिया समाज),रमेश जायसवाल(अध्यक्ष जायसवाल समाज),डॉ.सचिन सिंह (अध्यक्ष युवा ब्रिगेड असोसिएशन), उपस्थित रहे इस अवसर पर पत्रकार राघवेंद्र द्विवेदी, सुशील कुमार पाण्डेय, नामदार राही, दयाशंकर पाण्डेय,अविनाश पाण्डेय, छोटेलाल शर्मा, संतोष जैसवार, अरविन्द बिन्द, बिपिन पांचाल का सम्मान किया गया मुलुंड के वरिष्ठ समाज सेवकों,एवं विविध क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य कर रहे लोगों का भी सम्मान किया गया राकेश शेट्टी ने कहा कि उत्तर भारतीयों को सदैव सम्मान कांग्रेस द्वारा दिया गया उन्हें मंत्री, सांसद, विधायक, महापौर कांग्रेस ने बनाया। वहीं विपक्ष ने धर्म, जाति, भाषा के नाम पर गुमराह कर दिया अब लोग विपक्ष की साजिश को पहचान गये हैं एड. अवनीश सिंह ने कहा कि जो लोग कांग्रेस से दूर हो गये हैं, उन्हें वापस लाने और कांग्रेस को मजबूत बनाने का कार्य मुझ पर सौंपा गया है मैं इस महत्वपूर्ण जवाबदारी को निभाने में पूरी शक्ति एवं संकल्प के साथ कार्य करूँगा। कार्यक्रम के आयोजन में भगवान किशोर तिवारी, अरविन्द यादव, संतोष सिंह, जीतेन्द्र शर्मा, मोहनलाल राज, हरीश गुप्ता, राजेंद्र उठवाल,डॉ. आर. एम. पाल,एड. शरीफ खान, रइस खान,मोहित सिंह,आकाश पाण्डेय, अनिल सिंह,विनोद कजानिया, राकेश मिश्रा का विशेष योगदान रहा।

किसान की जेब से 50 हजार की चोरी

ई-रिक्शा में बैठे जेब कतरे ने वारदात को दिया अंजाम, बाइक पर फरार

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

शाहजहांपुर , जलालाबाद के ग्राम कसारी निवासी राम जीत रविवार को खाद खरीदने शहर आए थे। खाद नहीं मिलने पर वे ई-रिक्शा से वापस लौट रहे थे। फरुर्खाबाद रोड स्थित बालाजी मंदिर के पास ई-रिक्शा में पहले से बैठे एक व्यक्ति ने उनकी जेब से 50 हजार रुपये चुरा लिए। जब राम जीत को चोरी का पता चला तो उन्होंने जेब कतरे का हाथ पकड़ लिया। इस पर आरोपी ई-रिक्शा से कूद गया। किसान भी उसका पीछा करने लगे। इसी दौरान एक बाइक आई और जेब कतरा उस पर बैठकर फरार हो गया। पीड़ित की शिकायत पर पुलिस ने मौके पर पहुंचकर आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की जांच शुरू कर दी है। एक दुकान के सीसीटीवी फुटेज में आरोपी की तस्वीर मिली है। कोतवाल राजीव राय ने बताया कि सोमवार सुबह 10 बजे शिकायत मिली है और मामले की जांच की जा रही है।

श्रद्धालुओं की कार को ट्रक ने मारी टक्कर

5 लोग घायल, जिला अस्पताल में भर्ती, शाहजहांपुर में हादसा

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

शाहजहांपुर , मीरानपुर कटरा थाना क्षेत्र में एक सड़क हादसा हुआ। घटियाघाट जल लेने जा रहे श्रद्धालुओं की ईको कार को एक ट्रक ने टक्कर मार दी। हादसे में पांच श्रद्धालु घायल हो गए।

बरेली जिले के ग्राम शेखापुर से सात लोग ईको कार में फरुर्खाबाद स्थित घटियाघाट के लिए निकले थे। खैरपुर चौराहे के पास जलालाबाद की तरफ से आ रहे ट्रक ने उनकी कार में सामने से टक्कर मार दी। इस टक्कर में कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। घायलों में सेवानिवृत्त अध्यापक रामबाबू शुक्ला, सुरेंद्र कुमार, नेत्रपाल सिंह, हरिशंकर अवस्थी और अमित कुमार शामिल हैं। सभी घायलों को पहले मीरानपुर कटरा स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया। प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें जिला अस्पताल रेफर किया गया। मीरानपुर कटरा पुलिस मौके पर पहुंची और स्थिति का जायजा लिया। ट्रक चालक मौके से फरार हो गया। पुलिस उसकी तलाश कर रही है।

धर्मांतरण का प्रलोभन देने वाले दंपति गिरफ्तार

3 लाख रुपए का लालच देकर हिंदुओं को ईसाई बनाने का लगा था आरोप, न्यायालय में पेश

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

शाहजहांपुर, धर्मांतरण के मामले में पुलिस ने एक दंपति को गिरफ्तार किया है। आरसी मिशन थाना क्षेत्र में 19 जुलाई को विवेक और उसकी पत्नी ऐंजल ने अपने मकान में एक सभा का आयोजन किया था। सभा में लोगों को ईसाई धर्म अपनाने के लिए तीन लाख रुपए का प्रलोभन दिया जा रहा था। रेती मोहल्ले के दो युवक जब सभा में पहुंचे तो उन्होंने देखा कि वहां हिंदू देवी-देवताओं का अपमान किया जा रहा था। विरोध होने पर आरोपी दंपति ने सभा में मौजूद लोगों को पत्थरबाजी के लिए उकसाया। इस घटना के बाद युवक ने एफआईआर दर्ज कराई। मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने आरोपी विवेक और ऐंजल को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में सामने आया कि दोनों अपने मकान में धर्मांतरण की गतिविधियां चला रहे थे। पुलिस ने दोनों आरोपियों को न्यायालय में पेश किया है।

एसपी ने किया शिव मंदिर का निरीक्षण

सुरक्षा व्यवस्था की समीक्षा, भगवान शिव का किया जलाभिषेक

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

शाहजहांपुर, पुलिस अधीक्षक राजेश द्विवेदी ने सावन पर पटना देवकली शिव मंदिर का दौरा किया। उन्होंने मंदिर की सुरक्षा व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया और थाना प्रभारी निरीक्षक कलान प्रभाष चंद्र को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। एसपी ने मंदिर परिसर में भीड़ प्रबंधन, प्रवेश व निकासी मार्ग, बैरिकेटिंग और सीसीटीवी कैमरों की व्यवस्था की समीक्षा की। उन्होंने मंदिर प्रबंधन समिति और पुजारियों से भी मुलाकात कर उनकी जरूरतों की जानकारी ली। इस दौरान एसपी ने भगवान शिव का जलाभिषेक कर पूजा-अर्चना की। रात से ही श्रद्धालुओं का मंदिर में आना शुरू हो गया था। हाईवे से मंदिर तक श्रद्धालुओं की लंबी कतारें देखी गईं। मंदिर के महंत के अनुसार, पटना देवकली का शिव मंदिर दैत्य गुरु शुक्राचार्य की तपोस्थली है। यहीं उन्होंने घोर तपस्या कर संजीवनी विद्या प्राप्त की थी। श्रद्धालुओं का मानना है कि सावन में भगवान शिव की पूजा और जलाभिषेक से जीवन में सुख-शांति आती है। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक (नगर) देवेंद्र कुमार, पुलिस अधीक्षक (ग्रामीण) भंवरे दीक्षा अरुण और सीओ जलालाबाद अजय कुमार राय भी मौजूद रहे।

शाहजहांपुर जेल में पहली बार कांवड़ यात्रा

- 220 पुरुष और 21 महिला बंदियों ने किया जलाभिषेक, ब्रिटिश नागरिक महिला बंदी ने लिया हिस्सा

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

शाहजहांपुर, जेल में पहली बार कांवड़ यात्रा का आयोजन किया गया। इस यात्रा में 220 पुरुष और 21 महिला बंदियों ने हिस्सा लिया। जेल प्रशासन ने पांचाल घाट से गंगाजल मंगवाया। बंदियों ने जेल के अंदर ही कांवड़ तैयार की। शिव मंदिर की साफ-सफाई कर गुब्बारों से सजावट की गई। कुछ बंदियों ने शिव-पार्वती का रूप धारण किया, जिसके लिए पहले से ही पोशाक की व्यवस्था की गई थी। वरिष्ठ जेल अधीक्षक मिजाजीलाल के नेतृत्व में सभी जेल अधिकारी मौजूद रहे। बंदी भगवान शंकर के झंडे और राष्ट्रीय तिरंगे के साथ गंगाजल और पूजन सामग्री लेकर तैयार हुए। जेल अधीक्षक ने शिव-पार्वती बने बंदियों और कावड़िया बने बंदियों का माल्यार्पण किया। कारागार के हर अहाते और बैरक में कांवड़ यात्रा निकाली गई। महिला बंदियों ने अपनी बैरक में अलग से यात्रा निकाली। उन्होंने भजन गाते हुए शिवलिंग का जलाभिषेक किया।

भारत संवाद परिवार

1-संरक्षक-भारत संवाद
डॉ राम किशोर शर्मा
पूर्व विभागाध्यक्ष इलाहाबाद विश्व विद्यालय कबीर सम्मान 2021 से सम्मानित,
2-संरक्षक-भारत संवाद
आचार्य पं0 पृथ्वीनाथ पाण्डेय
भाषाविज्ञानी एंव मीडियाध्ययन विशेषज्ञ
3-संरक्षक-भारत संवाद
गजानन महतपुरकर
(सुपरिचित कवि, लेखक, गीतकार, मंच संचालक, स्वतंत्र पत्रकार एवं सदस्य, महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी तथा पश्चिम रेलवे, चर्चगेट के वरिष्ठ जनसम्पर्क अधिकारी पद से सेवानिवृत्त)
4-कला एवं मनोरंजन संपादक
(भारत संवाद)
जगन्नाथ तिवारी
5-उपसंपादक (भारत संवाद)
माता प्रसाद शर्मा
6-प्रभारी प्रयागराज संस्करण
(भारत संवाद)
आशीष कुमार शर्मा

ट्रम्प ने ओबामा की गिरफ्तारी का एआई वीडियो शेयर किया

एफबीआई ने कॉलर पकड़कर गिराया, हथकड़ी लगाई, पास में बैठे मुस्कुराते दिखे प्रेसिडेंट

एजेंसी

वॉशिंगटन डीसी, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने सोशल मीडिया पर पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा की गिरफ्तारी का एआई से बना वीडियो पोस्ट किया है। इस वायरल वीडियो में दिखाया गया है कि बराक ओबामा को एफबीआई एजेंट व्हाइट हाउस के ओवल ऑफिस में गिरफ्तार कर रहे हैं। वीडियो में ओबामा को ट्रम्प के पास बैठे दिखाया गया है। इसके बाद 3 एजेंट्स आते हैं। एजेंट्स ओबामा का कॉलर पकड़कर उन्हें धक्का देकर नीचे गिरा देते हैं और उनके हाथों में हथकड़ियां लगाते हैं। पास में ही बैठे ट्रम्प यह सब देखकर मुस्कुरा रहे हैं। वीडियो के अंत में ओबामा जेल की पोशाक में एक सेल के अंदर नजर आते हैं। वीडियो की शुरूआत ओबामा के एक पुराने बयान से होती है, जिसमें वे कहते हैं, कोई भी, खासकर राष्ट्रपति भी कानून से ऊपर नहीं है। इसके बाद कई डेमोक्रेटिक नेताओं की क्लिप जोड़ी गई है, जिनमें जो बाइडेन भी

शामिल हैं, जो दोहराते हैं झ कोई भी कानून से ऊपर नहीं है। इस वीडियो को लेकर ट्रम्प की ओर से कोई सफाई नहीं दी गई है कि यह वीडियो फर्जी है। उन्होंने यह नहीं बताया कि यह सिर्फ एक काल्पनिक दृश्य है। इस वीडियो की वजह से ट्रम्प की खूब आलोचना हो रही है। कई लोगों ने इसे उकसाने वाला बताया और कहा कि एक राष्ट्रपति का इस तरह के फर्जी वीडियो शेयर करना लोकतंत्र के लिए खतरनाक हो सकता है। ट्रम्प ने कुछ हफ्ते पहले ही ओबामा पर प्रशासन पर 2016 के चुनाव में उनके खिलाफ चुनावी धोखाधड़ी की साजिश रचने का आरोप लगाया था। इससे पहले अमेरिका की राष्ट्रीय खुफिया निदेशक तुलसी गबार्ड ने भी ट्रम्प पर 2016 के चुनाव में गड़बड़ी का आरोप लगाया। गबार्ड ने कहा कि ओबामा और उनके प्रशासन के कई सीनियर अधिकारियों ने मिलकर एक देशद्रोही साजिश रची थी। इनका मकसद यह साबित करना था कि ट्रम्प की 2016 की राष्ट्रपति चुनाव में जीत रूस की मदद से हुई थी। गबार्ड ने कहा कि इस साजिश का हिस्सा वह मशहूर रिपोर्ट भी थी, जिसे एक ब्रिटिश खुफिया विश्लेषक क्रिस्टोफर स्टील ने तैयार किया था। गबार्ड का कहना है कि इस रिपोर्ट को अमेरिकी एजेंसियों ने अविश्वसनीय माना था,

इसके बावजूद इसे सबूत की तरह इस्तेमाल किया गया। गबार्ड ने ओबामा के अलावा जिन लोगों को साजिश में शामिल बताया है, उनमें उस समय के राष्ट्रीय खुफिया निदेशक जेम्स क्लैपर, पूर्व सीआईए निदेशक जॉन ब्रेनन, तत्कालीन विदेश मंत्री जॉन कैरी, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार सुजैन राइस, एफबीआई के डिप्टी डायरेक्टर एंड्रयू मैक्केब के नाम हैं। गबार्ड के ऑफिस ने जो दस्तावेज जारी किए हैं, उनमें से एक का शीर्षक है रूस होक्स (यानी रूस को लेकर गढ़ा गया झूठ)। इस रिपोर्ट में 9 दिसंबर 2016 को ओबामा की राष्ट्रीय सुरक्षा टीम की बैठक का जिक्र है।

इसमें कहा गया है कि उस मीटिंग के बाद खुफिया एजेंसियों के कुछ अफसरों ने वॉशिंगटन पोस्ट जैसे मीडिया संस्थानों को जानबूझकर गलत जानकारी लीक करनी शुरू की, जिसमें कहा गया कि रूस ने अमेरिकी चुनाव को प्रभावित करने के लिए साइबर हथियारों का इस्तेमाल किया।

जापान में पीएम इशिबा की पार्टी ऊपरी सदन में हारी

1955 के बाद पहली बार दोनों सदनों में बहुमत नहीं, प्रधानमंत्री पर इस्तीफे का दबाव

एजेंसी

टोक्यो, जापान में प्रधानमंत्री शिगेरु इशिबा की लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी (एलडीपी) और उसके सहयोगी दल ने देश के ऊपरी सदन में अपना बहुमत खो दिया है। हालांकि उन्होंने साफ कर दिया है कि वो प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा नहीं देंगे। जापानी संसद के उच्च सदन में कुल 248 सीटें हैं। इशिबा के गठबंधन के पास पहले से 75 सीटें थीं। बहुमत बनाए रखने के लिए उन्हें इस चुनाव में कम से कम 50 नई सीटों की जरूरत थी, लेकिन उन्हें केवल 47 सीटें ही मिल पाईं। इनमें से अकेले एलडीपी को 39 सीटें मिली हैं। एक सीट का नतीजा अभी आना बाकी है

यह हार पीएम इशिबा के लिए दूसरी बड़ी राजनीतिक असफलता है। इससे पहले अक्टूबर में निचले सदन का चुनाव हारने के बाद अब यह गठबंधन दोनों सदनों में अल्पमत में चला गया है। एलडीपी की स्थापना 1955 में हुई थी, और यह पहला मौका है जब उसने दोनों सदनों में बहुमत खो दिया है। यह चुनाव उस वक्त हुआ जब जापान में मंहगाई बढ़ रही है और अमेरिका द्वारा लगाए जा सकने वाले टैरिफ को लेकर लोगों में चिंता है।

बीबीसी के मुताबिक इन मुद्दों को लेकर सत्तारूढ़ गठबंधन के खिलाफ नाराजगी देखी गई। चुनाव में हार के बावजूद प्रधानमंत्री इशिबा ने साफ कहा कि वो पद नहीं छोड़ेंगे। उन्होंने कहा कि वह देश के लिए काम करते रहेंगे और अमेरिका के टैरिफ जैसे मुद्दों से निपटने की कोशिश करेंगे। हालांकि पिछले तीन प्रधानमंत्रियों ने जब उच्च सदन में बहुमत खोया था, तो उन्होंने दो महीनों के भीतर इस्तीफा दे दिया था। ऐसे में इशिबा पर भी दबाव बढ़ सकता है। अगर वे हटते हैं तो एलडीपी में नई लीडरशिप की दौड़ शुरू हो सकती है। इसमें कई बड़े नाम जैसे साने ताकाइची, ताकायुकी कोबायाशी और शिंजिरो कोइजुमी शामिल हैं। जापान में अक्टूबर 2024 में हुए चुनाव में एलडीपी-कोमेतो गठबंधन को 465 में से सिर्फ 215 सीटें मिली थीं। यहां बहुमत के लिए 233 सीटें चाहिए। एलडीपी सबसे बड़ी पार्टी रही। कोई दूसरा गठबंधन सरकार बनाने की स्थिति में नहीं था। मुख्य विपक्षी दल सी.डी.पी.जे को 148 सीटें मिलीं। बाकी विपक्षी पार्टियां आपस में बंटी हुई हैं।

विपक्ष नो-कॉन्फिडेंस मोशन लाना चाहता था, लेकिन इशिबा ने चेतावनी दी कि ऐसा हुआ तो वे संसद भंग करके दोबारा चुनाव कराएंगे। जिससे विपक्ष पीछे हट गया।

इजराइल के सीरिया पर हमले से ट्रम्प नाराज

रिपोर्ट में दावा- व्हाइट हाउस बोला- नेतन्याहू पागल हो गए, बच्चों जैसी हरकतें कर रहे

एजेंसी

वॉशिंगटन डीसी, इजराइल के सीरिया पर हमले से ट्रम्प नाराज हैं। एक्सियोस की एक रिपोर्ट के मुताबिक व्हाइट हाउस, इजराइली बेंजामिन नेतन्याहू के बर्ताव पर नाखुशी जाहिर की है। व्हाइट हाउस के अधिकारियों ने नेतन्याहू को पागल और ऐसा बच्चा जो सही व्यवहार नहीं करता तक कह दिया है। व्हाइट हाउस का मानना है कि नेतन्याहू बेकाबू हो गए हैं और इस तरह काम कर रहे हैं, जैसे उनके पीछे कोई राजनीतिक एजेंडा हो। एक वरिष्ठ अधिकारी ने एक्सियोस को बताया कि बीबी (नेतन्याहू) पागलों जैसी हरकतें कर रहे हैं। वह हर जगह बम गिरा रहे हैं। इससे ट्रम्प की शांति कायम करने की कोशिशें कमजोर हो रही हैं। इजराइल ने सीरिया के डूज (शिया) बहुल शहर स्वेदा में सीरियाई सेना के टैंकों पर हमला किया था, क्योंकि वहां स्थानीय सरकार पर नागरिकों की हत्या के आरोप लगे थे। इसके बाद इजराइल ने बुधवार को राजधानी दमिश्क पर भी हमला किया और कई इमारतों को निशाना बनाया। अमेरिका, गाजा के चर्च पर हमले से भी नाराज इससे पहले गाजा में इजराइली टैंक की बमबारी में एकमात्र कैथोलिक चर्च पर हमला हुआ था, जिसमें तीन लोगों की मौत हुई थी। इजराइली सेना ने इसे गलती बताया, लेकिन अमेरिकी प्रशासन में इससे गुस्सा फैल गया। एक अमेरिकी अधिकारी ने कहा, ₹हर दिन कुछ नया हो रहा है। ये सब क्या बकवास है? रिपोर्ट में कहा गया है कि सीरिया पर इजराइली हमला ट्रम्प प्रशासन के लिए पूरी तरह चौंकाने वाला था। एक अन्य अमेरिकी अधिकारी ने बताया कि गाजा के चर्च पर हुए हमले के बाद ट्रम्प ने नेतन्याहू को फोन कर जवाब मांगा। हालांकि राष्ट्रपति ट्रम्प ने इस चर्च हमले पर कोई सार्वजनिक बयान नहीं दिया, लेकिन उन्होंने नेतन्याहू को फोन किया और नाराजगी जताई। उन्होंने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री को इस हमले पर माफी मांगनी चाहिए, जिसके बाद नेतन्याहू ने एक बयान जारी किया। व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरोलिन लेविट ने कहा कि इस घटना पर ट्रम्प खुश नहीं हैं। सीरिया पर हमला व्हाइट हाउस के लिए इसलिए भी समस्या बन गया क्योंकि ट्रम्प उस देश में शांति लाना चाहते हैं और वहां पुनर्निर्माण के लिए अमेरिका की बड़ी भूमिका की घोषणा भी कर चुके हैं। इजराइल ने 17 जुलाई को गाजा में होली फैमिली चर्च पर हमला किया था। इसमें 3 लोगों की मौत हुई थी। एक वरिष्ठ इजराइली अधिकारी ने बताया कि ट्रम्प ने अपने कार्यकाल की शुरूआत में ही सीरियाई इलाकों पर इजराइल के नियंत्रण को समर्थन दिया था और तब से सैन्य कार्रवाई पर कोई आपत्ति नहीं जताई थी। लेकिन अब जब शिया डूज लड़ाके और सुन्नी बेडौइन कबीले एक-दूसरे से लड़ रहे हैं और सरकारी बल भी इसमें शामिल हो गए हैं, तब हालात काफी बिगड़ गए हैं। खबरों के अनुसार, सीरियाई सरकारी बलों ने महिलाओं और बच्चों की हत्या की, घर लूटे और डूज धार्मिक नेताओं की मूंछें तक काट दीं। इसके जवाब में डूज लड़ाकों ने सीरियाई सैनिकों की पिटाई की और उनके शवों के साथ तस्वीरें खिंचवाईं। पिछले एक हफ्ते में अब तक 1,000 से ज्यादा लोग मारे जा चुके हैं – इनमें 336 डूज लड़ाके, 298 आम डूज नागरिक, 342 सीरियाई सैनिक और 21 बेदोइन लड़ाके शामिल हैं।

पन्नू बोला-अमेरिका में 15 अगस्त को खालिस्तान फ्रीडम रैली निकालेंगे

इसके 2 दिन बाद जनमत संग्रह करेंगे; तिरंगा जलाने की धमकी दी

एजेंसी

अमृतसर, खालिस्तानी आतंकी सरगना गुरपतवंत सिंह पन्नू ने वीडियो जारी करके 15 अगस्त को अमेरिका खालिस्तान फ्रीडम रैली निकालने का ऐलान किया है। रैली अमेरिकी की राजधानी वॉशिंगटन डीसी में भारतीय दूतावास के बाहर निकाली जाएगी। इसके दो दिन बाद यहीं खालिस्तान के समर्थन में जनमत संग्रह किया जाएगा। वीडियो में पन्नू ने तिरंगा जलाने की भी

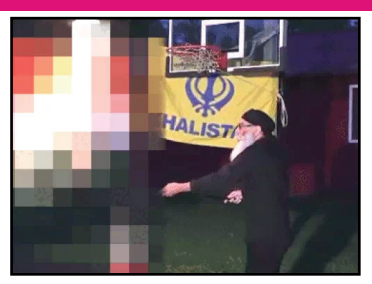

धमकी देते हुए कहा- तुमने पाकिस्तान पर हमला किया और वो बच गया। हम हिंदुस्तान को तबाह कर देंगे। वीडियो की शुरूआत में पन्नू कहता दिख रहा है कि 15 अगस्त सिख पंथ और पंजाब की आजादी का दिन नहीं है। 1950 का संविधान सिख धर्म को हिंदू धर्म का हिस्सा बताता है। जून 1984 गोल्डन टेंपल पर हमले के बाद ये तिरंगा श्री अकाल तख्त साहिब पर चढ़ाया गया था। उस दिन लाइन खींच दी गई थी। एक तरफ हिंदुस्तानी और हिंदूवादी थे और दूसरी तरफ थे पंजाब और सिख। वीडियो में पन्नू ने आगे कहा- इसी तिरंगे के नीचे दिल्ली में नरसंहार हुआ है। 30 हजार सिख शहीद किए गए। नरसंहार के बाद विधवा कॉलोनी सिर्फ सिख पंथ की है। ये कलंक हमारे माथे पर है। उस कलंक को मिटाने के लिए ये तिरंगा और हिंदुस्तान दुनिया के नक्शे से मिटाना पड़ेगा। 1984 से 1995 तक पंजाब में खून की होली खेली है। सारा पंजाब नरसंहार की भेंट किया। करीब 6 महीने पहले गुरपतवंत सिंह पन्नू ने एक वीडियो जारी किया था। इसमें उसने भारत में खालिस्तान यानी अलग देश के लिए जनमत संग्रह शुरू करने की बात कही थी।

खड़गे ने ऑपरेशन सिंदूर पर चर्चा की मांग की, नड्डा बोले- सरकार तैयार

राज्यसभा में कांग्रेस नेता मल्लिकार्जुन खड़गे ने ऑपरेशन सिंदूर के विवरण पर चर्चा की मांग करते हुए कहा कि विपक्ष इस मुद्दे का राजनीतिकरण नहीं करना चाहता। जवाब में, भाजपा के जेपी नड्डा ने कहा कि सरकार सभी सवालों के जवाब देने के लिए तैयार है।

एजेंसी

संसद के मानसून सत्र की सोमवार को हंगामेदार शुरूआत हुई। विपक्षी दलों ने पहलगाम आतंकी हमले, बिहार में मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) और अन्य मुद्दों पर तत्काल चर्चा की मांग की। दूसरी ओर, सरकार जीएसटी, खनन, खेल आदि से संबंधित विभिन्न विधेयकों पर चर्चा करने वाली है। राज्यसभा में कांग्रेस नेता मल्लिकार्जुन खड़गे ने ऑपरेशन सिंदूर के विवरण पर चर्चा की मांग करते हुए कहा कि विपक्ष इस मुद्दे का राजनीतिकरण नहीं करना चाहता। जवाब में, भाजपा के जेपी नड्डा ने कहा कि सरकार सभी सवालों के जवाब देने के लिए तैयार है।खड़गे ने कहा कि मैंने पहलगाम आतंकी हमले और ऑपरेशन सिंदूर पर नियम 267 के तहत नोटिस दिया है। आज तक, आतंकवादियों को पकड़ा या बेअसर नहीं किया गया है। सभी दलों ने सरकार को बिना शर्त समर्थन दिया। उन्होंने पूछा कि सरकार को हमें बताना चाहिए कि क्या हुआ है। जम्मू-कश्मीर के एलजी ने बयान दिया था कि खुफिया विफलता थी। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने 24 बार दावा किया है कि संघर्ष विराम केवल उनके हस्तक्षेप के कारण हुआ।खड़गे को जवाब देते हुए केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा ने कहा कि सरकार सदन में ऑपरेशन सिन्दूर पर चर्चा के लिए तैयार है। केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर ने कहा कि जिस तरह से भारत ने ऑपरेशन सिंदूर चलाकर आतंकवादियों को करारा जवाब दिया, उससे हमने दुनिया को संदेश दिया कि आतंकवाद बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। भाजपा सांसद मनोज तिवारी ने कहा कि किसी के मन में कोई संदेह नहीं होना चाहिए कि यह सत्र ऑपरेशन सिंदूर का उत्सव है और हम इसे मनाने जा रहे हैं। जो लोग अपने देश और उसकी सेना पर गर्व करते हैं, वे ऑपरेशन सिंदूर की जीत का जश्न जरूर मनाएंगे और हम इसी भावना के साथ संसद में प्रवेश कर रहे हैं।

वो आज भी जस्टिस वर्मा हैं, आपके दोस्त नहीं, मर्यादा रखिए...

सीजेआई गवई ने वकील को फटकारा, एफआईआर की मांग वाली याचिका पर तत्काल सुनवाई से किया इनकार

वकील ने कहा कि इस याचिका पर तत्काल विचार करना जरूरी है। वकील ने कहा कि इसे खारिज करना असंभव है। एफआईआर दर्ज होनी चाहिए। अब लगता है वर्मा यही मांग कर रहे हैं। एफआईआर होनी चाहिए, जाँच होनी चाहिए। शीर्ष अदालत ने आरोपी जज को 'वर्मा' कहने पर वकील को फटकार लगाई और कहा कि वह वकील का दोस्त नहीं है।

एजेंसी

सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा के घर से नकदी मिलने के मामले में उनके खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने की मांग वाली याचिका पर तत्काल सुनवाई की मांग ठुकरा दी। वकील मैथ्यूज नदुम्पारा ने मुख्य न्यायाधीश बी आर गवई और न्यायमूर्ति के विनोद चंद्रन की पीठ से आग्रह किया कि इस मुद्दे पर यह उनकी तीसरी याचिका है और इस पर तत्काल सुनवाई पर विचार किया जाना चाहिए। हालांकि, मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि याचिका को उचित समय पर सूचीबद्ध किया जाएगा। पीटीआई ने मुख्य न्यायाधीश गवई के हवाले से कहा कि क्या आप चाहते हैं कि इसे अभी खारिज कर दिया जाए इसका जवाब देते हुए, वकील ने कहा कि इस याचिका पर तत्काल विचार करना जरूरी है। वकील ने कहा कि इसे खारिज करना असंभव है। एफआईआर दर्ज होनी चाहिए। अब लगता है वर्मा यही मांग कर रहे हैं। एफआईआर होनी चाहिए, जाँच होनी चाहिए। शीर्ष अदालत ने आरोपी जज को 'वर्मा' कहने पर वकील को फटकार लगाई और कहा कि वह वकील का दोस्त नहीं है। मुख्य न्यायाधीश ने कहा, क्या वह आपके दोस्त हैं? वह अभी भी जस्टिस वर्मा हैं। आप उन्हें कैसे संबोधित करते हैं? थोड़ी मयार्दा रखिए। आप एक विद्वान जज की बात कर रहे हैं। वह अभी भी अदालत के जज हैं। केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने रविवार को कहा कि न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा को हटाने के प्रस्ताव पर 100 से ज्यादा सांसदों ने हस्ताक्षर किए हैं। रिजिजू ने बताया कि इनमें से 40 सांसद कांग्रेस पार्टी के हैं, जिनमें राहुल गांधी भी शामिल हैं।8 मई को तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना ने संसद को न्यायमूर्ति वर्मा के खिलाफ महाभियोग चलाने की अनुमति दी थी। उन्होंने जाँच के निष्कर्षों पर एक रिपोर्ट प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को भी भेजी थी। चूंकि मानसून सत्र आज से शुरू हो रहा है, इसलिए यह प्रस्ताव कभी भी पेश किया जा सकता है। घटना की जांच कर रहे जांच पैनल की रिपोर्ट में कहा गया था कि न्यायमूर्ति वर्मा और उनके परिवार के सदस्यों का उस स्टोर रूम पर गुप्त या सक्रिय नियंत्रण था, जहां बड़ी मात्रा में अधजली नकदी मिली थी।

शिक्षा व्यवस्था में कुछ गड़बड़...

आईआईटी खड़गपुर और शारदा विश्वविद्यालय में आत्महत्याओं पर सुप्रीम कोर्ट ने लिया स्वतः संज्ञान

अदालत ने कहा कि उसे लगता है कि मामले में 'कुछ गड़बड़' है। अदालत ने पूछा कि क्या दोनों मामलों में एफआईआर दर्ज की गई थी। साथ ही, यह भी कहा कि अगर कोई गड़बड़ी पाई गई तो वह अवमानना की कार्यवाही शुरू करेगी। अदालत ने मामले में सहायता करने और मामले का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करने के लिए वरिष्ठ अधिवक्ता अपर्णा भट्ट को न्यायमित्र नियुक्त किया।

एजेंसी

सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को शारदा विश्वविद्यालय और आईआईटी खड़गपुर में आत्महत्याओं के मामलों का स्वतः संज्ञान लिया। शीर्ष अदालत ने दोनों संस्थानों को तलब किया और पूछा कि क्या पुलिस को समय पर मामले की जानकारी दी गई थी। अदालत ने कहा कि उसे लगता है कि मामले में 'कुछ गड़बड़' है। अदालत ने पूछा कि क्या दोनों मामलों में एफआईआर दर्ज की गई थी। साथ ही, यह भी कहा कि अगर कोई गड़बड़ी पाई गई तो वह अवमानना की कार्यवाही शुरू करेगी। अदालत ने मामले में सहायता करने और मामले का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करने के लिए वरिष्ठ अधिवक्ता अपर्णा भट्ट को न्यायमित्र नियुक्त किया। शारदा विश्वविद्यालय आत्महत्या मामलाग्रेटर नोएडा स्थित शारदा विश्वविद्यालय के गर्ल्स हॉस्टल में शनिवार रात बीडीएस द्वितीय वर्ष की एक छात्रा ने आत्महत्या कर ली। सूचना मिलने पर मौके पर पहुँची नॉलेज पार्क कोतवाली पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। घटना की सूचना मिलते ही छात्रा के परिजन भी मौके पर पहुँच गए। पुलिस को छात्रा के कमरे से एक सुसाइड नोट भी मिला है। छात्रा ने डेंटल विभाग की एक महिला और एक पुरुष शिक्षक पर मानसिक उत्पीड़न का आरोप लगाया है।

आप सरकार चलाएं, निशांत को सौंपें जेडीयू की कमान....

उपेंद्र कुशवाहा ने नीतीश को दी नसीहत

उपेंद्र कुशवाहा ने एक्स पर लिखा कि मीडिया/सोशल मीडिया से जानकारी मिली है कि आज बड़े भाई आदरणीय नीतीश कुमार जी के सुपुत्र निशांत का जन्मदिन है। खुशी के इस अवसर पर जेडीयू की नई उम्मीद निशांत को जन्म दिन की ढेर सारी शुभकामनाएं।

एजेंसी

एनडीए के घटक दल और पूर्व केंद्रीय मंत्री उपेंद्र कुशवाहा ने बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को जनता दल (यूनाइटेड) की कमान छोड़ने की सलाह देते हुए कहा कि अब उनके लिए सरकार और पार्टी दोनों को एक साथ संभालना संभव नहीं रहा। इसके साथ ही, कुशवाहा यह सुझाव देने वाले भाजपा और जदयू के पहले सहयोगी बन गए। नीतीश के पुराने मित्र कुशवाहा ने उनके बेटे निशांत को जन्मदिन की बधाई देते हुए यह बात कही और उन्हें जद(यू) की नई उम्मीद भी बताया। उपेंद्र कुशवाहा ने एक्स पर

लिखा कि मीडिया/सोशल मीडिया से जानकारी मिली है कि आज बड़े भाई आदरणीय नीतीश कुमार जी के सुपुत्र निशांत का जन्मदिन है। खुशी के इस अवसर पर जेडीयू की नई उम्मीद निशांत को जन्म दिन की ढेर सारी शुभकामनाएं। ईश्वर उसे हमेशा स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त रखें। इसके साथ ही उन्होंने आगे लिखा कि इस अवसर पर आदरणीय श्री नीतीश कुमार जी से अति विनम्र आग्रह है कि समय और परिस्थिति की नजाकत को समझते हुए इस सच को स्वीकार करने की कृपा करें कि अब सरकार और पार्टी दोनों का (साथ-साथ) संचालन स्वयं उनके लिए भी उचित नहीं है।उन्होंने कहा कि सरकार चलाने का उनका लंबा अनुभव है जिसका लाभ राज्य को आगे भी मिलता रहे, यह फिलहाल राज्य हित में अतिआवश्यक है। परन्तु पार्टी की जवाबदेही के हस्तांतरण (जो वक्त मेरी ही नहीं स्वयं उनकी पार्टी के हजारों कार्यकर्ताओं/नेताओं की राय में अब आ चुका है) के विषय पर समय रहते ठोस फैसला ले लें। यही उनके दल के हित में है। और इसमें विलंब दल के लिए अपूर्णीय नुकसान का कारण बन सकता है। शायद ऐसा नुकसान जिसकी भरपाई कभी हो भी नहीं पाये। हालांकि, अपने पोस्ट के नोट में कुशवाहा ने यह भी लिखा कि मैं जो कुछ कह रहा हूं, जदयू के नेता शायद मुख्यमंत्री जी से कह नहीं पाएंगे और कुछ लोग कह भी सकते हों, तो वैसे लोग वहां तक पहुंच ही नहीं पाते होंगे।

संक्षेप

कुएं से मिले गोवंशों के कटे सिर

ग्रामीणों ने हाईवे पर 3 घंटे प्रदर्शन किया, सीओ बोले- पुराने हैं अवशेष, एफआईआर दर्ज

सुलतानपुर, जयसिंहपुर कोतवाली क्षेत्र के मेंहाराम गांव में सोमवार को कुएं से गोवंशों के कटे सिर मिले हैं। घटना की जानकारी मिलते ही क्षेत्र के ग्रामीण इकट्ठे हो गए। आक्रोशित ग्रामीणों ने टांडा-बांदा राष्ट्रीय राजमार्ग पर डफलपुर गांव के पास प्रदर्शन शुरू कर दिया। गोसाईगंज थाना क्षेत्र की सीमा पर स्थित एक कुएं में लगभग एक दर्जन गोवंशों के कटे हुए सिर मिले। ग्रामीणों का आरोप है कि पुलिस की लापरवाही के कारण क्षेत्र में गोकशी की घटनाएं हो रही हैं। गोसाईगंज और जयसिंहपुर पुलिस ने स्थिति को नियंत्रित करने का प्रयास किया। संत आनंद चैतन्य के अनुसार, पुलिस ने नामजद एफआईआर दर्ज करने और 27 जुलाई तक आरोपियों की गिरफ्तारी का आश्वासन दिया है। कार्रवाई का आश्वासन सीओ आशुतोष कुमार ने कहा कि मिले अवशेष पुराने प्रतीत होते हैं। उन्होंने जांच के बाद कड़ी कार्रवाई का आश्वासन दिया। एसएचओ सत्येंद्र कुमार सिंह ने बताया कि अज्ञात लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर दिया गया है और आरोपियों की तलाश जारी है। धरने की चेतावनी पुलिस के आश्वासन के बाद करीब तीन घंटे तक चला प्रदर्शन समाप्त हो गया। संत आनंद चैतन्य ने चेतावनी दी है कि यदि 27 जुलाई तक कार्रवाई नहीं हुई तो वे जिले में धरना देंगे।

किसान को सांप ने डसा

खेत में काम करते समय हुआ हादसा, अस्पताल ले जाते समय युवक की मौत

सुलतानपुर, जिले के चांदा क्षेत्र के भेरौरा गांव में खेत में काम कर रहे किसान पवन (32) की सांप के काटने से मौत हो गई। श्याम बहादुर के पुत्र पवन सुबह खेत में कृषि कार्य कर रहे थे, तभी अचानक उन्हें सांप ने डस लिया। घटना के बाद परिजन उन्हें गंभीर हालत में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र प्रतापपुर कमैचा लेकर पहुंचे, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। पति की मौत की खबर सुनकर पत्नी ममता बेहोश हो गईं। पवन अपने पीछे पत्नी और तीन छोटे बच्चों को छोड़ गए हैं। बड़ी बेटी पायल (9), मंझली पलक (5) और सबसे छोटा बेटा आयुष सिर्फ 3 साल का है। पवन ही परिवार के एकमात्र कमाने वाले सदस्य थे। उनकी असमय मौत से परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है।

नाबालिग बेटी का अपहरण

घर से 16 साल की लड़की को दूसरी बार किया अगवा, परिवार सहित आरोपी फरार

सुलतानपुर, जयसिंहपुर कोतवाली क्षेत्र से एक नाबालिग लड़की के अपहरण का मामला सामने आया है। कोतवाली क्षेत्र के एक गांव के निवासी की 16 वर्षीय बेटी को पुरुषोत्तमपुर निवासी स्वप्निल मिश्रा 18 जुलाई को शाम 3 बजे बहला-फुसलाकर अपने साथ ले गया। यह पहली बार नहीं है जब स्वप्निल ने ऐसी हरकत की है।

अस्पताल ने आयुष्मान लाभार्थी से वसूल लिए रुपए

डीएम की सख्ती के बाद लौटाए, सीएमओ ने अस्पताल संचालक को दी चेतावनी

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

प्रयागराज, प्राइवेट अस्पताल में आयुष्मान भारत योजना के मरीज से रुपये लेने का मामला सामने आया है। महिला मरीज के पास आयुष्मान योजना का कार्ड था, लेकिन अस्पताल प्रशासन ने उसे स्वीकार नहीं किया। करीब 12 दिन इलाज किया गया जिसके बाद मरीज से करीब एक लाख रुपये ले लिए गए। इसकी शिकायत जब शासन स्तर पर हुई तो जिलाधिकारी रविंद्र कुमार मांदड़ के निर्देशन में जांच कमेटी गठित हुई। इसके बाद आज सोमवार को अस्पताल प्रशासन ने मरीज के तीमारदार को 1.8 लाख के चेक वापस किए। सीएमओ ने अस्पताल संचालक को इसके लिए चेतावनी दी है कि आगे यदि इस तरह की मनमारी सामने आती है तो सख्त कार्रवाई की जाएगी। जांच

कमेटी में एसीएमओ डॉ. आरसी पांडेय व डॉ. राजेश कुमार, जिला स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी राकेश कुमार जायसवाल व वरिष्ठ सहायक अवधेश सिंह शामिल रहे।

छोटा बघाड़ा की रहने वाली आनंद प्रकाश सिंह की माता कमला देवी की तबीयत बिगड़ी थी। एक जनवरी को उन्हें फेफड़े में परेशानी हुई तो वह लेकर पूजा हास्पिटल गए। आयुष्मान भारत योजना का कार्ड होने के बाजवूद अस्पताल प्रशासन ने इसे नहीं स्वीकार।

आनंद प्रकाश बताते हैं कि ज्यादा सीरियस होने के कारण तत्काल माताजी को इसी अस्पताल में भर्ती करा दिया। करीब 12 दिन अस्पताल में भर्ती रहीं। अस्पताल प्रशासन ने पूरे 1.8 लाख रुपये लिए। हमने इसकी शिकायत प्रधानमंत्री के पोर्टल पर भी की थी।

इसके बाद डीएम के निर्देशन में सीएमओ स्तर से जांच शुरू हुई और आज अस्पताल प्रशासन ने पूरे इलाज में खर्च रुपये वापस किए।

कोटेदारों ने राशन वितरण बंद किया

मानदेय बढ़ाने और 6 माह से मानदेय नहीं मिलने को लेकर विरोध में जुटे कोटेदार

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

प्रयागराज , कोटेदारों की लंबित मांगों को लेकर प्रदेश भर में चल रहे विरोध प्रदर्शन के समर्थन में प्रयागराज के कोटेदार आ गए हैं। उन्होंने एकजुट होकर आज सिविल लाइंस स्थित धरना-प्रदर्शन स्थल पर जोरदार प्रदर्शन किया। इस विरोध के चलते आगामी तीन दिनों – 20, 21 और 22 जुलाई को अगस्त माह 2025 का राशन वितरण कार्य कोई भी विक्रेता नहीं करेगा। यह निर्णय उत्तर प्रदेश कोटेदार संघ के प्रदेश अध्यक्ष राजेश तिवारी द्वारा लिया गया है। जिसे एक ज्ञापन के माध्यम से जिलाधिकारी प्रयागराज, जिला पूर्ति अधिकारी प्रयागराज एवं आयुक्त महोदय, जवाहर भवन, लखनऊ को अवगत करा दिया गया है। कोटेदारों का कहना है कि हमारा भी घर है, बाल बच्चे हैं, बच्चों की स्कूल फीस भरना होता है, परिवार का पेट भरना होता है। उनका 6 माह से बकाया मानदेय नहीं दिया जा रहा है। प्रदर्शन में जिले के सैकड़ों कोटेदार शामिल हुए और उन्होंने सरकार के खिलाफ नारेबाजी करते हुए अपनी मांगों को जोरदार ढंग से प्रस्तुत किया। प्रमुख मांगों में कोटेदारों का मासिक मानदेय ?200 प्रति कुंतल करने की मांग प्रमुख रही। जो अन्य प्रदेशों की तरह उत्तर प्रदेश में भी लागू किया जाए। इसके साथ ही छः महीनों से लंबित मानदेय का भुगतान अब तक न होने पर भी कोटेदारों ने नाराजगी जताई। प्रदर्शनकारियों का कहना है कि यदि सरकार ने जल्द उनकी मांगों पर सकारात्मक निर्णय नहीं लिया, तो यह विरोध प्रदेशव्यापी आंदोलन का रूप ले सकता है। कोटेदार संघ ने चेतावनी दी है कि मांगें पूरी न होने तक वितरण कार्य में हिस्सा नहीं लिया जाएगा। आल इंडिया फेयर प्राइस एसोसिएशन के जिला अध्यक्ष का कहना है कि हमारी मांगो को सरकार नहीं सुनती हम कोटेदार भाई ही कोरोना के समय अपने पूरे परिवार की जान जोखिम में डाल कर राशन का वितरण किया। सरकार इस महंगाई में हम कोटेदारों के दर्द को नहीं समझ रही है। मानदेय को नहीं बढ़ा रही है।

पुलिस पर रिश्वत और मारपीट का आरोप

- बकरी व्यापारी और उसके बेटे को थाने में पीटा, एक लाख रुपए लेकर छोड़ा

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

अमेठी जिला, एक बकरी व्यापारी ने स्थानीय पुलिस पर गंभीर आरोप लगाए हैं। थाना जामों पुलिस ने 10 जुलाई को व्यापारी के पुत्र इरशाद को खोंपुर गांव से उठाया। जब पिता थाने पहुंचा, तो उसे भी अंदर बैठा लिया गया। पीड़ित का आरोप है कि बिना एफआईआर दर्ज किए दोनों को शारीरिक रूप से प्रताड़ित किया गया। थाने में उन्हें पट्टे व लात-घूंसे से मारा गया। इससे पीड़ित की कमर के नीचे चोटें आईं। गांव के प्रधान उमापति तिवारी की मध्यस्थता में एक लाख रुपए की मांग की गई। यह राशि थाने के हेड मोहर्रिर दिनेश को दी गई। इसके बाद दोनों को शांति भंग की धारा में चालान कर छोड़ा गया। पीड़ित ने बताया कि इससे पहले 26 जून को एसओजी टीम उन्हें उठा ले गई थी। तब भी सवा लाख रुपये लेकर छोड़ा गया था। उस समय भी प्रधान उमापति तिवारी ने मध्यस्थता की थी। परिवार का कहना है कि अब उनके बेटे को जेल भेजने की धमकी दी जा रही है। दरोगा और हेड मोहर्रिर लगातार फोन कर बुला रहे हैं। पीड़ित ने एसपी से शिकायत कर कार्रवाई की मांग की है।

कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने खड़गे का मनाया जन्मदिन

सुल्तानपुर में कांग्रेसियों ने काटा केक, कल किसानों की मांगों को लेकर करेंगे प्रदर्शन

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

सुलतानपुर, कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे का जन्मदिन धूमधाम से मनाया। जिलाध्यक्ष अभिषेक सिंह राणा और शहर अध्यक्ष शकील अंसारी ने केक काटकर कार्यकर्ताओं का मुंह मीठा कराया। कार्यक्रम में जिलाध्यक्ष राणा ने खड़गे के राजनीतिक जीवन पर प्रकाश डाला।

उन्होंने बताया कि खड़गे कई दशकों से राजनीति में सक्रिय हैं। वे दो दशक बाद गांधी परिवार से बाहर के पहले कांग्रेस अध्यक्ष बने हैं। खड़गे 2021 से राज्यसभा में विपक्ष के नेता हैं और 2020 में कर्नाटक से राज्यसभा सांसद रहे हैं। शहर अध्यक्ष शकील अंसारी ने कहा कि खड़गे के नेतृत्व में पार्टी प्रगति कर रही है। कार्यक्रम में अरशद पवार, पवन मिश्र, ममनून आलम, रियाज अहमद, सुब्रत सिंह सनी समेत कई नेता मौजूद रहे। जिलाध्यक्ष राणा ने बताया कि किसानों की समस्याओं को लेकर प्रदर्शन किया जाएगा। खरीफ फसल की रोपाई के लिए खाद, पानी और बिजली की कमी से जूझ रहे किसानों की मांगों को लेकर राज्यपाल को ज्ञापन सौंपा जाएगा।

आंधी से गिरे बिजली के खंभे

- सरवन और विजयपुर गांव में पांच दिन से अंधेरा, 5000 लोग प्रभावित

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

अमेठी, फुरसतगंज के डिघिया फीडर से जुड़े सरवन और विजयपुर गांव में पिछले पांच दिनों से बिजली आपूर्ति बंद है। 17 जुलाई को आई तेज आंधी में सरवन गांव में बिजली के पांच खंभे गिर गए। इससे गांव की करीब पांच हजार की आबादी प्रभावित हुई है। विजयपुर गांव में भी एक खंभा टूटने से बिजली आपूर्ति ठप है। सरवन गांव के लगभग एक दर्जन ग्रामीण विद्युत उपकेंद्र फुरसतगंज पहुंचे। उन्होंने बिजली बहाली की मांग को लेकर प्रदर्शन किया। ग्रामीणों ने जेई राम अचल गुप्ता को अपनी समस्या बताई। जेई गुप्ता ने ग्रामीणों को बिजली आपूर्ति जल्द बहाल करने का आश्वासन दिया। उन्होंने ग्रामीणों से नए खंभों को उपकेंद्र से ले जाने में सहयोग मांगा। इसके बाद विभागीय कर्मचारी मरम्मत कार्य करेंगे। कर्मचारियों की कमी के कारण काम में देरी हो रही है। विजयपुर में शाम तक बिजली आपूर्ति शुरू होने की संभावना है।

कान्हा की नगरी मथुरा में बम भोले की धूम

- गंगाजल लेकर पहुंचे कांवड़

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

मथुरा, सावन के महीने में भगवान कृष्ण की नगरी शिवमय नजर आ रही है। ब्रज के शिव मंदिरों पर भक्तों की भीड़ है। भक्त भगवान भोलेनाथ की आराधना कर शिव भक्ति कर रहे हैं। भगवान शिव का अभिषेक करने के लिए कोई गंगा जी तो कोई यमुना जी से जल ला रहा है। सावन भगवान भोलेनाथ की आराधना करने के लिए भक्त गंगाजल कांवर में लेकर आ रहे हैं। ऐसे ही शिवभक्तों का मथुरा आगरा की सीमा पर स्थित फरह थाना की रैपुराजाट चौकी पर स्वागत किया गया। चौकी प्रभारी तेजेन्द्र सिंह, उप निरीक्षक रेनू सिंह और समाज सेवी जितेंद्र चौधरी ने ग्रामीणों के साथ कांवरियों का दुपट्टा डालकर स्वागत किया। इस मौके पर चौकी प्रभारी ने सभी कावड़ियों को फल के साथ जूस भी दिया। रैपुराजाट पुलिस चौकी के पास पहुंचे यह कांवरिए फरह के पिपरौठ गांव के रहने वाले थे। जो कि करीब 200 किलोमीटर दूर सोरों के कछला घाट से गंगाजल लेकर आए हैं। 4 युवकों का यह दल पहली बार कांवर लेकर आया। दल के सदस्य पूरी भक्ति आस्था और भोले की मस्ती में डूबे नजर आए। भगवान शिव के जलाभिषेक के लिए श्री मातृ शक्ति आचार्य पीठ सेवा ट्रस्ट के द्वारा हरिद्वार से कांवर कलश पदयात्रा निकाली जा रही है। यह पदयात्रा हरिद्वार से शुरू होकर मथुरा पहुंची। जहां कांवर लेकर आए सदस्यों ने भगवान गोपेश्वर नाथ का अभिषेक किया। ट्रस्ट की अध्यक्ष साध्वी चेतना गिरी के वृंदावन पहुंचने पर कनकधारा फाउंडेशन की अध्यक्ष लक्ष्मी गौतम ने उनका पटका पहनाकर स्वागत किया।

लापता युवक का शव नाले में मिला

दो दिन पहले घर से निकला था, वापस नहीं लौटा; परिवार ने जताई हत्या की आशंका

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

अलीगढ़, गोंडा थाना क्षेत्र के गांव लालगढ़ी में घर से दो दिन से गायब चल रहे युवक का शव गांव के पास ही एक नाले में पड़ा मिला। आसपास से गुजरने वाले लोगों ने जब नाले में शव देखा तो वहां लोगों की भीड़ लग गई और इसकी जानकारी पुलिस को दी गई। घटना की जानकारी मिलने पर क्षेत्रिय पुलिस तत्काल मौके पर पहुंची और शव को बाहर निकलवाया गया। जिसके बाद फोरेंसिक विभाग की टीम ने मौके पर पहुंचकर जांच की और पुलिस मृतक की शिनाख्त में जुट गई। आसपास के लोगों से पूछताछ करने पर एक युवक के लापता होने की सूचना मिली। जिसके बाद पुलिस ने उसके परिवार जनों को सूचना दी। गांव लालगढ़ी निवासी विष्णु (28) अपने घर से निकला था। उसके पिता कुंवरपाल ने बताया- हर दिन की तरह विष्णु घर से निकला था। इसलिए किसी ने ध्यान नहीं दिया। देर रात तक जब वह घर वापस नहीं लौटा तो उसकी खोजबीन शुरू की गई। उन्होंने बताया- रविवार शाम तक उसका कुछ पता नहीं चला। जिसके बाद उन्होंने पुलिस में शिकायत की थी। पुलिस ने उन्हें नाले में शव मिलने की सूचना दी। जिसके बाद उन्होंने मौके पर पहुंचकर उसकी शिनाख्त कर ली है। वहीं दूसरी ओर सोमवार को पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराया है। शव परिजनों को सौंप दिया है। मृतक के पिता कुंवरपाल ने बताया- उनकी बेटे की किसी से कोई रंजिश या इस तरह का मामला नहीं था। लेकिन उन्हें आशंका है कि किसी ने उनके बेटे की हत्या करके शव नाले में फेंक दिया है। उन्होंने पुलिस से न्याय की गुहार लगाई है। वहीं पुलिस मामले की हर पहलू से जांच कर रही है। सीओ महेश कुमार ने बताया कि मौत के कारण जानने के लिए पोस्टमार्टम कराया गया है। फोरेंसिक टीम ने भी साक्ष्य जुटाए हैं। परिवार से तहरीर लेकर मुकदमा दर्ज किया जा रहा है। जल्दी ही घटना का खुलासा किया जाएगा।

किसान संगोष्ठी और मेले का आयोजन

स्वास्थ्य मंत्री रहे उपस्थित, 20 किसानों को मिनी किट और अनुदान का हुआ वितरण

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

अमेठी जिला, आयोजित किसान संगोष्ठी और मेले में स्वास्थ्य राज्य मंत्री मयंकेश्वर शरण सिंह ने किसानों से संवाद किया। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार किसानों के हित के लिए काम कर रही है। मेले में किसानों को कृषि संबंधी जानकारी और सरकारी योजनाओं की जानकारी दी गई। कृषि विशेषज्ञों ने उत्पादकता बढ़ाने और मिट्टी की सेहत सुधारने के तरीके बताए। जिलाधिकारी संजय चौधरी ने किसानों को सभी योजनाओं का लाभ दिलाने का आश्वासन दिया। मुख्य विकास अधिकारी ने किसानों से श्री अन्न की खेती और जैविक खेती को बढ़ावा देने का आग्रह किया। कृषि उप निदेशक संजय कुमार ने सिंचाई सुविधाओं के बेहतर उपयोग पर जोर दिया। कृषि अधिकारी राजेश यादव ने दलहन और तिलहन की खेती को बढ़ावा देने की सलाह दी। कार्यक्रम में बहादुरपुर ब्लॉक के 20 चयनित किसानों को मिनी किट और विभिन्न योजनाओं के तहत अनुदान दिया गया। भाजपा जिलाध्यक्ष सुधांशु शुक्ला, सीएमओ डॉ. अंशुमान सिंह और अन्य अधिकारियों ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। कार्यक्रम का उद्घाटन स्वास्थ्य राज्य मंत्री और जिलाधिकारी ने फीता काटकर किया।

सांप के डसने युवती की मौत

बकरी बांधने गई थी, अस्पताल में इलाज के दौरान तोड़ा दम

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

सुलतानपुर, लंभुआ थाना क्षेत्र के खुनशेखपुर गांव में सर्प दंश से एक युवती की मौत हो गई। मृतका की पहचान हरीराम की 20 वर्षीय पुत्री अंतिमा के रूप में हुई है। घटना उस समय हुई जब अंतिमा घर के बगल स्थित टीन शेड में बकरी बांधने गई थी। वहां बैठे एक सांप ने उसे डस लिया। परिजनों को जैसे ही घटना की जानकारी मिली, वे तुरंत उसे निजी अस्पताल ले गए। लेकिन उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। युवती की मौत के बाद परिवार में कोहराम मच गया। गुस्साए ग्रामीणों ने सांप की तलाश कर उसे मार डाला। सूचना मिलने पर लंभुआ पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और विधिक कार्यवाही शुरू कर दी है।

गौशाला निर्माण पर विवाद

ग्राम पंचायत पर सार्वजनिक धन के दुरुपयोग का आरोप, किसानों ने दी आंदोलन की चेतावनी

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

अमेठी जिला, जिले की ग्राम पंचायत लोहरता में गौशाला निर्माण को लेकर विवाद गहरा गया है। धनराशि जारी होने के बावजूद निर्माण कार्य अधूरा है। भारतीय किसान यूनियन के जिला उपाध्यक्ष अजय मिश्रा ने निर्माण में घटिया सामग्री के इस्तेमाल का मुद्दा उठाया है। जिला अधिकारी ने मामले की जांच बेसिक शिक्षा अधिकारी को सौंपी है। ग्राम पंचायत के सचिव और प्रधान पर सार्वजनिक धन के दुरुपयोग का आरोप है। आवारा पशुओं से किसानों की फसलें नष्ट हो रही हैं। गौशाला के पूरा होने से इन पशुओं को संरक्षण मिल सकेगा। पूर्व में भी निर्माण कार्य में अनियमितताएं मिली थीं। जांच के बाद भी कोई कार्रवाई नहीं की गई। किसान यूनियन ने जांच में तेजी लाने की मांग की है। ग्रामवासियों ने कार्रवाई न होने पर आंदोलन की चेतावनी दी है। इसके अलावा, किसान यूनियन के जिला उपाध्यक्ष ने थाना दिवस में एक अन्य शिकायत दर्ज कराई है। उन्होंने ग्राम प्रधान पर हरे पेड़ों की अवैध कटाई और बिक्री का आरोप लगाया है। इस मामले में भी अभी तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है। जिलाधिकारी संजय चौहान ने कहा जांच कराकर कार्यवाही की जाएगी।

स्वामी, प्रकाशक , मुद्रक अरविंद कुमार शर्मा द्वारा एफ एल टी ,एलजी 75 आर एम 4/4 इंदिरा नगर, सुंदर बाग,कुर्ला (प)मुंबई 400070 महाराष्ट्र से प्रकाशित एवं AIS PRINTING SOLUTION प्लांट नं० –A–544 TTC इंडस्ट्रियल एरिया एम आई डीसी माहपे नवी मुंबई ,ठाणे 400709 से मुद्रित। संपादक – अरविंद कुमार शर्मा

EMail-bsmumbai2017@gmail.com किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र मुम्बई न्यायालय ही होगा। 8097049935,9935750291RNI No-MAHHIN2017/74173

संपर्क का कार्यालय– 66/68 भाखरिया बिल्डिंग मीना मेहता मार्ग मोदी स्ट्रीट मुम्बई 400001

संरक्षक– डॉ राम किशोर शर्मा पूर्व विभागाध्यक्ष (हिन्दी) इलाहाबाद विश्व विद्यालय, विशेष संवाददाता– आशीष कुमार शर्मा सह, सम्पादक– माता प्रसाद शर्मा, फिल्म– संपादक–जगन्नाथ तिवारी